क्या ? क्या ?? सीखें !!!

120

काँग्रेस के इतिहास के ५० वर्ष हमें बताते हैं कि हम कहाँ थे अब कहाँ हैं।

भारत का भविष्य पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियों के हाथ में है।

—जवाहरलाल नेहरू।

कामुकता भरे उपन्यास और पत्र पत्रिकायें पढ़ना छोड़ दें। उन अमर रचनाओं को पढ़ें जो संसार के लिये जीवन प्रद हैं। समय पर काम देने और पथ प्रदर्शन के लिये एक पुस्तक को सदा के लिये अपनी सहचरी बना लें।

—महात्मा गांधी।

बहुत बार ऐसा हुआ है कि पुस्तकों के अध्ययन से मनुष्य ने अपने भविष्य को बना लिया है।

—एमर्सन।

Rajeev

निराकार पुस्तकालय, बनारस सिटी।

क्या ? क्या ?? सीखें !!!

कॉंग्रेस के इतिहास के ५० वर्ष हमें बताते हैं कि हम कहाँ थे अब कहाँ हैं।

भारत का भविष्य पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियों के हाथ में है।

—जवाहरलाल नेहरू।

कामुकता भरे उपन्यास और पत्र पत्रिकायें पढ़ना छोड़ दें। उन अमर रचनाओं को पढ़ें जो संसार के लिये जीवन प्रद हैं। समय पर काम देने और पथ प्रदर्शन के लिये एक पुस्तक को सदा के लिये अपनी सहचरी बना लें।

—महात्मा गांधी।

बहुत बार ऐसा हुआ है कि पुस्तकों के अध्ययन से मनुष्य ने अपने भविष्य को बना लिया है।

—एमर्सन।

निराकार पुस्तकालय, बनारस सिटी।

प्रकाशक—
निराकार पुस्तकालय
लाजपतराय रोड
बनारस सिटी।



मुद्रक—
सहादुरराम
हितैषी प्रिंटिंग वर्क्स,
नीचीबाग, बनारस।

विषय सूची

एक दृष्टि

देश के नाम पर मर मिटने का समय आगया है !

बलिदान का सर्वोत्तम ढंग

क्या ?? क्या ?? सीखें !!!

नामक पुस्तक से सीखिये ।

ऐसा ढंग जिसमें:—

आत्म-हत्या पाप है !

हिंसा त्याज्य है !

अत्याचार, पाप, छल, और

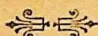
धूर्त्तता निन्द्य हैं:—

यह सब इस लिये कि इसका प्रत्येक शब्द अनमोल मोती लाल और जवाहर है। देश कल्याण का मार्ग प्रदर्शक है। वीरत्व का उत्पादक है। कायरता को पास नहीं फटकने देता। जिसे देश के नाम पर, आन पर, शान पर, मरने या कुछ करने का हौसला है वह तत्काल एक पुस्तक खरीद करः—

सीखें कुछ सीख युवक युवती, इन समुचित अनुपम शब्दों से।
सारी बातें बन जावेंगी जो बिगड़ रहीं हैं अब्दों से॥

—प्रकाशक ।

ईश्वर



ईश्वर के अखण्ड न्याय का नियम विचित्र है।

× × ×

उसकी इच्छानुसार अत्याचारी और अत्याचार की विषम यंत्रणा से छटपटाने वाले दोनों साथ साथ चलते हैं।

× × ×

पापी और पुण्यात्मा, शत्रु तथा मित्र, मुक्ति की ओर उसके राज्य में कन्धे से कन्धा मिलाकर चलते हैं।

—जार्जिया डालगस जानसन हवशि कवियत्री।

× × ×

प्रकृति के कुटिल नियमों की कड़ी जंजीरों से जकड़ा हुआ जो पाषाण हृदय न्यायाधीश है उसी का नाम ईश्वर है।

× × ×

ऐसे ईश्वर से प्रार्थना, पूजन, अर्चन के द्वारा जो क्षमा और दया के पात्र बनते हैं वही नास्तिक हैं।

—एक जिज्ञासु।

× × ×

परमेश्वर ही सत्य है और सत्य का अर्थ है परमेश्वर।

× × ×

विचार में जो सत्य प्रतीत हो उसके विवेक पूर्वक आचरण का नाम ही सत् कर्म हैं।

× × ×

ब्रह्मचर्य का अर्थ है ब्रह्म अथवा परमेश्वर की ओर जाना, अर्थात् अपने मन और इन्द्रियों को परमेश्वर की ओर ले जाना।

— महात्मा गांधी।

× × ×

ईश्वर है या नहीं, उसका स्वरूप कैसा है इसकी दार्शनिक चर्चा करना फिजूल है। हृदय में स्फुरण करने वाले अखण्ड आत्म तत्व पर जिसका विश्वास हो वही आस्तिक है।

× × ×

पापी से पापी मनुष्य भी पुण्य और पवित्रता ही को झाँकता है यही श्रद्धा तो अस्तिकता है।

× × ×

साधु लोग पग पग पर चाहे भलेही परास्त हों और दुर्जन उन्मत्त होकर अधिकार पा गये हों तब भी अन्त में कर्म ही की

विजय है। एक २ हृदय में सज्जनता का उदय होनाही आस्तिकता है।

× × ×

ईश्वर का नाम स्मरण करने से सर्व दुख दूर हो जाते हैं।

योग दर्शन १-२१

× × ×

जिसके गुण कर्म स्वभाव और स्वरूप सत्य ही है जो केवल चेतन मात्र वस्तु है। जो एक अद्वितीय सर्व शक्तिमान निराकार सर्वत्र व्यापक अनादि और अनन्त आदि सत्य गुण-वाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी ज्ञानी आनन्दी शुद्ध, न्याय कारी, दयालु, और अजन्मादि है उसका कर्म जगत की उत्पत्ति, पालन और विनाश करता तथा सर्व जीवों को पाप पुण्य के फल ठीक २ पहुँचाता है उसको ईश्वर कहते हैं।

× × ×

जिसका स्वरूप विद्यादि शुभ गुणों का दान और सत्य-भाषणादि सत्याचार का करना है उसे पुण्य कहते हैं।

× × ×

जो पुण्य से उल्टा और मिथ्या भाषणादि करना है उसे पाप कहते हैं।

—दयानन्द सरस्वती।

× × ×

प्रकृति के सच्चे नियम और कानून का दूसरा नाम ईश्वर है। न्याय, नियम और कानून किसी की तरफदारी नहीं करता यदि तत्व की यह बात समझ में आजाय तो हृदय को अपूर्व शांति मिल सकती है।

—मिचेल एजंलो।

× × ×

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

× × ×

ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप निराकार सर्व शक्तिमान न्यायकारी दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय नित्य पवित्र और सृष्टि-कर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

—दयानन्द सरस्वती।

× × ×

ईश्वर कर्ता की स्वतन्त्रता को नहीं छीनता और न किये हुये शुभाशुभ कर्म फल को नष्ट करता है।

मौलाना रूम।

+ × ×

यदि तुम ईश्वर के सिवा अन्य किसी से न डरोगे तो संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति भी तुम्हारे चरणों पर लोटेगी।

—भगवान तिलक।

× × ×

चल उठ ! यहाँ क्या आँख मूँदे गोमुखी में हाथ डाले जपकर रहा है ? यदि ईश्वर के दर्शन करने हैं तो वहाँ चल जहाँ किसान जेठ की दुपहरी में हल जोतकर चोटी का पसीना एँड़ी तक बहा रहा है।

—रवीन्द्र।

× × ×

सच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वर अनादि अनंत और सर्व व्यापक है वह नाम रूप से दूर है।

—युगुल किशोर बिडला।



ब्रह्मचर्य और स्वास्थ्य

ब्रह्मचर्य का अर्थ है ब्रह्म अथवा परमेश्वर की ओर जाना अर्थात् अपने मन और इन्द्रियों को परमेश्वर की ओर ले जाना।

× × ×

ब्रह्मचर्य का अर्थ केवल वीर्य रक्षा करना अथवा काम-जय ही नहीं; बल्कि इसमें सभी इन्द्रियों का संयम आवश्यक है।

× × ×

जीवन के सुख पूर्वक निर्वाह के लिये, इन्द्रियों का कुछ न कुछ भोग आवश्यक होता है, परन्तु ब्रह्मचर्य से जीवन निर्वाह असम्भव नहीं होता, उल्टा अधिक अच्छा और तेजस्वी होता है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

जिससे सुख पूर्वक प्राणायाम कर सकें वही आसन है। कितने ही आचार्य कमलासन, पद्मासन आदि चौरासी प्रकार के आसन बतलाते हैं। प्रयोजन यह कि जिससे काम निर्विघ्न हो सके वही आसन है

× × ×

आसन पर बैठ कर अन्दर आने वाले श्वास और बाहर जाने वाले प्रश्वास की जो स्वाभाविक गति है उसे दूर कर स्वेच्छा के अनुकूल कर लेने का नाम प्राणायाम है।

—योगदर्शन।

× × ×

जो मनुष्य अपने मन को वश में नहीं कर सकते वे अपनी इन्द्रिय शरीरादि को भी वश में नहीं कर सकते। और जिनके वश में अपने शरीरादि नहीं होते, वे अपने कुटुम्ब को भी वश में नहीं कर सकते। जो अपने कुटुम्ब को वश में नहीं कर सकते। वे अपने नगर देशादि को कैसे वश में कर सकते हैं।

—न्याय दर्शन १।१।२१।

× × ×

रोग एक प्रकार से हमारा निरीक्षक है जो सदैव हमारी अवस्था की जाँच किया करता है। जहाँ हमने कोई गड़बड़ी की जरा सी असावधानी की तुरन्त आकर हमें घेर लेता है और जोर २ से चिल्ला कर कहता है कि यदि तुम सुख चाहते हो तो

अपनी अवस्था ठीक करो। प्रकृति माता की शरण में आवो उसकी आज्ञा और शिक्षा का पालन करो।

—महात्मा गांधी।

× × ×

प्रत्येक घर में विद्वान बलवान और महा पुरुषों के चित्र तथा प्राकृतिक सुन्दर दृश्यों के फोटू अवश्य रहना चाहिये वे चरित्र सुधारने में बड़े सहायक होते हैं। उन्हें देख कर किसी बुरे काम के करने का साहस नहीं होता।

—गणेशशंकर विद्यार्थी।

× × ×

प्राणायाम करने से मन प्रसन्न होता है और अज्ञान का पर्दा हट जाता है।

—योगदर्शन।

× × ×

अधिक भोजन करने से लाखों आदमी मर चुके। पर कम खाने से आज तक कोई नहीं मरा।

—नेपोलियन वोनापार्ट।

× × ×

लाखों मनुष्य अपने जबान के फावड़े से कब्र खोदते हैं।

—फिरयालोजी।

× × ×

घी तेल मिश्रित तथा पौष्टिक पदार्थ खाने वाले दीर्घायु नहीं होते। दीर्घजीवी मनुष्य बहुधा शीघ्र पाचक तथा सात्विक भोजन पर ही निर्वाह करने वाले हुये हैं।

× × ×

जो मनुष्य दुःख से तंग आकर अरब के सहरा में जा बसे थे वे बड़ी आयु को पहुँचे यद्यपि उनको दिन रात में केवल डेढ़ पाव रोटी और पानी मिलता था तब भी वह लोग बली और तन्दुरुस्त थे।

—डाक्टर गोल्डस्मिथ

× × ×

इस बात को कभी न भूल, कि न तो कभी पूर्णतः ब्रह्मचारी रहा है और न रह सकता है। हाँ तू उसके नजदीक जरूर पहुँच सकता है। इस प्रयत्न में निराश न होना चाहिये।

× × ×

प्रलोभनों के सामने और पतन की डाढ़ों में पहुँच जाने पर भी अपने आदर्श को न भूलना। और न इस बात को भूलना कि यहाँ से भी अछूता ही निकल सकता है। —टाल्स्टाय।

× × ×

चाहे जितने वर्ष जिओ किन्तु यह याद रक्खो कि पहिला २० वर्ष जीवन का एक कीमती हिस्सा है।

—स्वामी विवेकानन्द।

× × ×

भोग विलास से बचे रहना और विषाक्त प्रेम के चक्कर में न पड़ना। यदि तुम इस फन्दे में पड़े तो तुम्हारा सर्वनाश हो जायगा।

× × ×

मनुष्य को निरोग बनानेवाले उसके विचार हैं, औषधि नहीं। —मिचेल एजंलो।

× × ×

महा पुरुष अपने सचरित्र से ही जनता को उपदेश देकर ऊपर उठाते हैं।

× × ×

सदाचारी पुरुष कठिन से कठिन कार्य में सफलता पा जाता है। दुराचार ही सब दुःखों का मूल है।

—विदुर।

× × ×

मनुष्य के चरित्र की जाँच उसके साथियों के चरित्र से होती है। जो लोग भला बनना चाहते हों उन्हें अच्छी संगति में रहना चाहिये।

× × ×

एक सदाचारी मनुष्य बिना जबान हिलाये सैकड़ों मनुष्यों को सुधार सकता है। पर जिसका आचरण ठीक नहीं है उसके लाखों उपदेशों का कुछ फल नहीं होता।

—मौलाना रूम।

× × ×

कुत्सित अस्वाभाविक और पाप युक्त इच्छाओं के दास मत बनो और न गिराने वाले आत्म-प्रेम और आत्म-दया को अपने हृदय में स्थान दो।

× × ×

उच्च जीवन के तत्व को समझो। इसका नियम है अपने आप को पहिचानना। आत्मबोध प्राप्त करना।

× × ×

संदेह रहित रहना ही उच्च जीवन है।

—स्वामी रामतीर्थ।

× × ×

प्राणायाम, व्यायाम, ब्रह्मचर्य, सदाचार, शुद्ध विचार, और संयम ये दीर्घ जीवन और उन्नति के सफल साधन हैं।

—स्वामी रामतीर्थ।

× × ×

दुराचारी और झूठा मनुष्य अपने दुर्व्यसनों पर अधिकार नहीं कर सकता वह अपने नीच स्वभाव का गुलाम है।

—कार्ल मार्क्स।

× × ×

ब्रह्मचारी की शक्ति के सामने सारा संसार मस्तक झुकावेगा। उसका प्रभाव मुकुटधारी राजा की अपेक्षा कहीं अधिक पड़ेगा।

× × ×

आप खोज कर भले और पवित्र मनुष्यों को अपना साथी बनावें।

× × ×

भोगी पुरुष खाने के लिये जीता है और संयमी पुरुष जीने के लिये खाता है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

दिन में यदि तीन बार अट्टहास करो तो वैद्य की आवश्यकता नहीं पड़ती।

—बर्नार मेकफेडन।

× × ×

जल अजीर्ण में औषध है। पच जाने पर जल बलदायक है। भोजन के समय पानी अमृत के समान है भोजन के अंत में जल विष का फल देता है।

—चाणक्य।

× × ×

पवित्रता जीवन की अमूल्य सम्पति है। इस पर जीवन की सफलता निर्भर है। इसकी मनुष्य को प्राणप्रण से रक्षा करनी चाहिये। प्राण के बिना शरीर की जो कीमत है वही पवित्रता के बिना जीवन की।

—सुकरात।

× × ×

कुंदरू शीघ्रही बुद्धि को हर लेता है परन्तु बच झटपट देती है। स्त्री तुरन्त ही शक्ति हर लेती है दूध शीघ्र ही बल देता है।

—चाणक्य

× × ×

मनुष्य सौ वर्ष तक हृष्ट पुष्ट चलता फिरता सर्वांग पूर्ण सुखी होकर जीवित रह सकता है। —वेद।

× × ×

अति घमण्ड, अति बोलना, दान न देना, क्रोध, मेरा ही पेट भरे यह इच्छा और मित्र-द्रोह यह छः पैनी तलवारें हैं जो मनुष्यों की आयु को छेदन कर प्राणान्त कर देती हैं।

× × ×

अल्प भोजी को आरोग्य, आयु, बल और सुख, निर्दोष संतान प्राप्त होती है और कोई पेटू नहीं कहता।

× × ×

संसार की नौका को सदाचारी ही पार लगाता है और दुराचारी डुबो देता है।

× × ×

नम्रता अपयश को मारती है। पराक्रम दरिद्रता को मारता है क्षमा क्रोध को मारती है सदाचार सदैव बुरे लक्षण को मारता है। —म० विदुर।

× × ×

शिक्षादीक्षा

हमारी सम्पूर्ण शिक्षा विधि सड़ी हुई है। इसकी फिर नये सिरे से रचना करने की जरूरत है।

× × ×

यदि मेरा वस चले तो आज कल पाठशालाओं में जो पुस्तकें पढ़ाई जाती है उनमें अधिकांश को नष्ट कर दूँ और ऐसी पुस्तकें लिखवाऊँ जिनसे गृह जीवन का निकट सम्बन्ध हो।

—महात्मा गांधी।

× × ×

कपड़े पुराने से पुराने पहिनो पर पुस्तकें नई खरीदो।

—अस्टिन फिलिपस।

× × ×

मैं नरक से भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूँगा क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये रहेंगी वहाँ आपही स्वर्ग बन जायगा।

—भगवान तिलक।

× × ×

पराजय का भय ही उच्च शिक्षा है।

—वेराडेल फ़िलिप्स।

× × ×

यदि हिन्दी विद्यार्थी अपनी पवित्र भाषा संस्कृत का सहारा लेकर ऐतिहासिक चिन्हों की तलाश करें तो अपनी जाति के अमूल्य ऐतिहासिक ग्रन्थ मिलने में लेश मात्र भी संशय नहीं।

× × ×

आज कल जो इतिहास स्कूलों में लड़कों को पढ़ाया जाता है वह ऐसा दुरंगा है कि कहीं सिर पैर का पता नहीं लगता। देश के विद्वानों में से कुछ लोगों ने प्राचीन इतिहास लिखने की ओर ध्यान दिया है परन्तु अत्यन्त शोक के साथ लिखना पड़ता है कि उन्होंने स्वयं कुछ अनुसंधान नहीं किया बल्कि पिछले इतिहासकारों की लिखी हुई पुस्तकों के आधार पर अपना मत प्रगट किया है।

—लाला लाजपतराय।

× × ×

शिक्षा का प्रारम्भ अक्षर ज्ञान से नहीं बल्कि आद्योगिक शिक्षा से होना चाहिये। ऐसे धंधे का ज्ञान जिनसे जीवन निर्वाह हो सके बच्चे को लड़कपन से ही देना चाहिये।

\+ + +

खेती और वस्त्र ये दो भारत के राष्ट्रीय उद्योग हैं अतएव प्रत्येक पाठशाला में इन दोनों धंधों की शिक्षा का प्रबंध होना चाहिये।

× × ×

ज्ञान का मूल स्रोत पुस्तकों में नहीं है बल्कि अवलोकन अनुभव और विचार शक्ति में है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

यदि जाति की अवनति या निन्दा होगी, अथवा अन्य जाति से पराजित होगी तो अपमान होगा। और जो अवनति जाति की होगी वह स्वयं उसका कारण समझा जायगा। अतएव उचित है कि सम्पूर्ण संकल्पों में श्रेष्ठ अपनी जातीय उन्नति के संकल्प को समझे।

× × ×

तर्क वितर्क में वही मनुष्य जीतता है जो अधिक विद्वान होता है। युद्ध में वही मनुष्य जाति विजयिनी होगी जो अधिक बुद्धिमती तथा विद्या कुशल हो।

—लाला लाजपतराय।

× × ×

स्कूली शिक्षा ने अपना महत्व बढ़ाने के लिये भव्य भवनों महान साधनों, प्रचुर पुस्तकों, मृग तृष्णा की तरह दूर से लुभाने

वाले लाभों की आशाओं और चटक मटक आदि का बड़ा आडम्बर रचकर लोगों को कर्ज में डुबो दिया है।

× × ×

अंग्रेजी शिक्षा ने लोगों को धर्म से विमुख कर दिया है और धर्म तथा संयम के उन संस्कारों को जो चिरकाल से संगृहीत थे मिटाने का ही काम किया है।

× × ×

भारत के ८०-८५ फी सदी लोग प्रत्यक्ष या गौण रूप से खेती पर जीविका चलाते हैं। इसलिये उनकी शिक्षा की योजना इस दृष्टि से होना चाहिये कि जिससे वे अच्छे किसान बन सकें और खेतों में संलग्न अन्य धंधों का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

× × ×

जब तक शिक्षा के द्वारा जीविका का प्रश्न हल नहीं होता तब तक संस्कृति और ईश्वर ज्ञान देने वाली शिक्षा की बातें फ़जूल हैं।

× × ×

सैकड़ों शिक्षित मनुष्यों का सारा भण्डार अनेक पुस्तकों के पढ़ चुकने पर भी इतना थोड़ा होता है कि इतना भण्डार प्राप्त करने के लिये लाखों लोगों को लिखना पढ़ना सीखने की झंझट में डालने के बजाय यदि वे उन्हें जबानी शिक्षा देने लगें तो यह अनुभव होगा कि बहुतेरे वर्षों में मिलने वाली शिक्षा थोड़े समय में मिल गई। —महात्मा गांधी।

× × ×

जब अंग्रेज यहाँ आये तो उस समय भी विदेशियों का राज्य था परन्तु यहाँ की कई छोटी छोटी राजधानियाँ भिन्न २ प्रान्तों में स्वतन्त्र हो गई थीं। यदि अंग्रेज न आते तो सम्भव है कि सम्पूर्ण भारत में पुनः स्वदेशी राज्य स्थापित हो जाता।

—लाला लाजपतराय।

× × ×

भारतवर्ष के इतिहास में कोई शताब्दि ऐसी न बीती होगी जिसमें आर्य लोग स्वाधीन होने के लिये उद्योग न करते रहे हों। इस से अनुमान होता है कि भविष्य में भी इनका यह उद्योग जारी रहेगा।

× × ×

अपनी उन्नत दशा का इतिहास अवलोकन करना जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक अवनति का इतिहास अवलोकन करना भी।

× × ×

हमारा इतिहास अधिकतर निकृष्ट अवस्था में है और वह मुसलमानों द्वारा लिखा हुआ बताया जाता है क्योंकि उसके अन्दर स्थान स्थान पर पक्षपात के स्पष्टतया प्रमाण मिलते हैं। इसके लिये यदि लेखकों पर दोष लगाया जाय तो अन्याय होगा।

× × ×

जिन दरबार में रह कर यह लेखक इनाम अथवा पारितोषिक पाते थे वह विदेशियों के मुसलमानी दरबार थे। मुसलमान बादशाहों को खुश करना इनका मुख्य कर्तव्य होता था। ऐसे लेखक स्वयं बादशाहों की तरफ से खुशामद भरे इतिहास लिखने के लिये विवश किये जाते थे। यही कारण है कि स्थान २ पर पक्षपात तथा द्वेष के चिन्ह पाये जाते हैं।

× × ×

मुसलमानों की वीरता-विजय, और हिम्मत के वृत्तान्त जोरदार शब्दों में पाये जाते हैं। परन्तु जहाँ भारतीयों की विजय वीरता की कथा का वर्णन आया है यहाँ चालबाजी धोखा और अन्यान्य कारणों का होना ही बताया है।

—लाला लाजपतराय।

× × ×

यदि आप सिपाही हैं तो रिश्वत से बचना चाहिये।

—महात्मा गांधी।

× × ×

बहुत सीधे स्वभाव का न बनना चाहिये। सीधे पेड़ काट दिये जाते हैं परन्तु टेढ़े और तिरछे खड़े रहते हैं।

—चाणक्य।

× × ×

संसार का सारा ज्ञान पुस्तकों में है जिन परिवारों में पठन पाठन का व्यसन नहीं सचमुच वह बड़े अभागे हैं।

—स्वामी रामतीर्थ।

× × ×

सज्जनों की मित्रता गम्भीर होती है। उनसे शीघ्र मित्रता होती ही नहीं और होने पर छूटती भी नहीं। दुष्टों से शीघ्र मित्रता हो जाती है और अनायास छूट भी जाती है। इनकी मित्रता बड़ी भयानक होती है।

—मौलाना रूम।

× × ×

विद्यार्थी, सेवक, पथिक, भूख से पीड़ित भय से कातर भण्डारी, द्वारपाल, यह सात यदि सोते हों तो जगा देना चाहिये।

—चाणक्य।

× × ×

यदि सुख चाहे तो विद्या का पढ़ना छोड़ दे। यदि विद्या चाहे तो सुख को छोड़दे। क्योंकि सुख चाहने वाला विद्या और विद्या चाहने वाला सुख नहीं पा सकता।

× × ×

काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, शृंगार, खेल, अतिनिद्रा और अति सेवा इन आठों को विद्यार्थी को छोड़ देना चाहिये।

—चाणक्य।

× × ×

इंसान भी कितना बेवकूफ और जाहिल है कि वह हजारों वर्षों के तज़रुबे से नहीं सीखता और बार बार वही हिमाकत करता है।

—जवाहरलाल नेहरू।

× × ×

किसी राष्ट्र का सब से बढ़कर महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा है।

—दादाभाई नौरोजी।

× × ×

"निष्फलता" और "असम्भव" शब्द मूर्ख और पागलों के शब्दकोष में रहते हैं।

—नेपोलियन।



मानव धर्म

जिस तरह मैं इस्लाम को मिथ्या नहीं मानता उसी भाँति पारसी ईसाई यहूदी धर्म भी सत्य हैं, फिर मैं किसे ग्रहण करूँ।

× × ×

मुझे हिन्दू धर्म भी मिथ्या नहीं प्रतीत होता यही नहीं वह सर्वश्रेष्ठ मालूम होता है इसी लिये मैं इस धर्म का पल्ला पकड़े बैठा हूँ। जिस प्रकार बालक माँ के साथ रहता है परन्तु बालक जिस प्रकार पर माता का तिरस्कार नहीं करता उसी प्रकार मैं पर धर्म का तिरस्कार नहीं करता।"

—महात्मा गांधी।

× × ×

मैं ईश्वर और मनुष्य जाति के पूर्ण एकत्व को मानता हूं। हमारे शरीर यदि भिन्न हैं तो क्या हुआ आत्मा तो एक ही है। मैं अपने को किसी दुष्टात्मा से प्रथक नहीं मान सकता।

× × ×

जिस कर्म के करने की प्रेरणा वेद में की गई है वही धर्म है।

—वेद।

× × ×

जो धर्म की रक्षा करता है धर्म स्वयं उसकी रक्षा करता है संसार को जानना चाहिये कि धर्म अपने अनुयायी को कभी नहीं छोड़ता।

—सुकरात।

× × ×

मेरा विचार है कि बिना धर्म का जीवन, बिना सिद्धान्त का जीवन होता है और बिना सिद्धान्त का जीवन वैसा ही है जैसा बिना पतवार का जहाज।

× × ×

जिस तरह बिना पतवार के जहाज मारा २ फिरता है उसी प्रकार धर्महीन पुरुष संसार में मारा २ फिरता है और अभीष्ट स्थान तक नहीं पहुँचता :

—महात्मा गांधी।

× × ×

जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है जोकि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये यही एक मानना योग्य है उसे धर्म कहते हैं।

× × ७५८: ×

धर्म का विरुद्ध रूप ही अधर्म है।

—दयानन्द सरस्वती।

× × ×

दुनियां में यदि कुछ पाप है तो वह दुर्बलता है। सभी प्रकार की दुर्बलता छोड़दो। दुर्बलता ही मृत्यु है यही पाप है।

—स्वामी विवेकान्द।

× × ×

Wark! Wark!! Wark!!! (कार्य कार्य कार्य) बस यही मूल मन्त्र है।

—स्वामी विवेकानन्द।

× × ×

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

× × ×

सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करना चाहिये।

—महर्षि दयानन्द।

× × ×

धर्म किसी खास कौम या व्यक्ति की ठीकेदारी नहीं वह तो हम सभी के लिये अभिमान की वस्तु है।

—ए० डबल्यू० खाँ।

× × ×

अपने सिद्धान्त पर स्थिर न रहना ही चरित्र हीनता का चिन्ह है। —एडिसन।

× × ×

हम आड़ लेकर धर्म की लवलीन हैं विद्रोह में।
मत ही हमारा धर्म है हम पड़ रहे हैं मोह में॥

× × ×

धनवान ही धार्मिक बने यद्यपि अधर्मी सक्त हैं।
हैं लाख में दो चार सुहृदय शेष बगुला भक्त हैं।

—भारत भारती।

× × ×

तुम्हारा धर्म केवल कर्म करने का है फल की आशा करना नहीं। —गीता।

× × ×

किसी सार्वजनिक कार्य में बहुत सा धन देना ही बलिप्रदान नहीं है। बलिप्रदान तन मन धन उस काम के लिये समर्पण हो तथा उसके पूर्ण करने में किसी दुख की परवाह न हो।

— लाला लाजपत राय।

× × ×

पाप का प्रायश्चित पश्चात्ताप है। पश्चात्ताप का अर्थ है पाप की पुनरावृत्ति न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा।

—सुकरात।

× × ×

जिसे न बुद्धि समझ सके न हृदय स्वीकार करे वह शास्त्र नहीं।

× × ×

बुद्धि के विपरीत जो हो उसे यदि शास्त्र की तरह माना भी जाता हो तब भी वह शास्त्र तो हो ही नहीं सकता। अनीत सीखना शास्त्र नहीं हो सकता।

—म० गांधी।

× × ×

यज्ञ, पढ़ना, दान, तप, सत्य, क्षमा, दया, लोभ न होना यह आठ प्रकार के धर्म मार्ग हैं।

× × ×

पराये के साथ वह काम न करे जो अपने आप को बुरा लगे संक्षेप से यही धर्म है। अन्य धर्म काम से प्रवृत्त होता है।

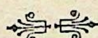
—म० विदुर।

× × ×

यह जितना जगत अर्थात् संसार के पदार्थ हैं अथवा समस्त ब्रह्माण्ड ईश्वर के रहने का स्थान है। संसार में कोई स्थान ऐसा नहीं जहाँ उसकी शक्ति न हो सारे जीव उसी का दिया हुआ प्रारब्ध रूपी भोग भोगते हैं। इसी लिये तू किसी का धन लेने की इच्छा न कर। —यजुर्वेद।



अहिंसा



अहिंसा ही परम धर्म है।

—भगवान बौद्ध।

× × ×

आज संसार में संगठित हिंसा की तूती बोल रही है और सम्भव है कि हम भी उसके प्रयोग से लाभ उठा सकते, पर संगठित हिंसा के लिये न तो हमारे पास समाज ही है न उसकी शिक्षा ही मिली है, और एक दो व्यक्तियों का हिंसात्मक साधन काम में लाना निराशा सूचक है।

× × ×

मैं मानता हूं कि इस प्रश्न पर हममें से अधिक लोग इस दृष्टि से विचार नहीं करते कि नैतिक दृष्टि से हिंसा ठीक

है या नहीं। बल्कि इस दृष्टि से करते हैं कि यह कार्य में लाई जा सकती है या नहीं और यदि हिंसा का मार्ग हम अस्वीकार करते हैं तो इसी से कोई तात्विक परिणाम की आशा नहीं पाई जाती। किन्तु अगर भविष्य में किसी समय यह कांग्रेस या राष्ट्र इस निर्णय पर पहुँचे कि हिंसा के साधनों से हम गुलामी से छुटकारा पा सकते हैं तो मुझे कुछ भी संदेह नहीं है कि यह उन्हें स्वीकार करेगी।

× × ×

हिंसा बुरी है, किन्तु गुलामी उससे भी अधिक बुरी है।

× × ×

कायरता के कारण लड़ने से इनकार करने से लड़ाई करना अधिक अच्छा है। स्वतन्त्रता के लिये कोई आन्दोलन हो उसका सार्वजनिक होना आवश्यक है। और सार्वजनिक आन्दोलन का शांतिपूर्ण होना अति आवश्यक है।

—महात्मा गांधी

× × ×

१४ वर्ष की परीक्षा के बाद भी अधिकांश कांग्रेसवादी अहिंसा का केवल नीति के ख्याल से पालन करते हैं। परन्तु मेरे लिये तो मौलिक सिद्धान्त है।

× × ×

कांग्रेसवादी आज भी (१६२६ ई०) अहिंसा नहीं मानते। इसमें उनका कसूर नहीं है। इस असफलता का कारण मेरे द्वारा उसका त्रुटिपूर्ण तरीके से पेश किया जाना और उससे भी बढ़कर उसका ग़लत तरीके से काम में लाया जाना हो सकता है।

× × ×

मैंने अपनी याद में तो कभी उसे गलत तरीके से पेश नहीं किया है परन्तु अभी तक कांग्रेस वादियों के जीवन में अहिंसा का बहुत महत्व पूर्ण स्थान नहीं हुआ है। इससे तो सम्भवतः यही नतीजा निकाला जा सकता है कि अभी अहिंसा को नीति समझ कर ही पालन किया जा रहा है।

× × ×

मुझे यह दुहराने की जरूरत नहीं है कि देश ने अहिंसा के मार्ग में काफ़ी उन्नति की है और आत्म त्याग का प्रदर्शन किया है। मैं तो यह कहना चाहता हूं कि हमारी अहिंसा विचारों शब्दों और कार्यों में विशुद्ध अहिंसा नहीं रही है।

× × ×

अब सबसे बड़ा कर्तव्य मेरा यह है कि मैं ऐसी तरकीब और तरीके निकालूँ जिनके द्वारा गवर्नमेण्ट और आतंक वादियों को यह अच्छी तरह बताया जा सके कि किसी भी

सत्य चीज को पाने के लिये और जिस में स्वतंत्रता भी पूरे अर्थ सहित सम्मिलित है सिर्फ एक अहिंसा का ही तरीका है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

जीवन का विश्वव्यापी कानून "सत्य" है जो वास्तव में मेरा ईश्वर है। उसकी खोज अहिंसा ही के द्वारा कर सकता हूं। इसके लिये दूसरा कोई तरीका नहीं है। और मेरे देश की स्वतन्त्रता दुनिया की स्वतन्त्रता की तरह इसी सत्य की खोज में शामिल है।

× × ×

यदि खुदाई खिदमतगार वास्तविक में अहिंसात्मक है तो वह अहिंसा का भाव फैलाने में सबसे ज्यादा सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त उनके द्वारा हिन्दू मुसलिम एक्य भी स्थापित हो सकता है।

× × ×

हिंसा एक या अनेक जालिम शासकों को उखाड़ कर फेंक दे सकती है किन्तु रावण के मस्तकों की तरह उनकी जगह वैसे ही दूसरे पैदा हो जावेंगे। जड़ तो जायगी नहीं। वह जड़ तो अपने हमारे अन्दर है। अगर हमने अपना सुधार कर लिया तो हमारे शासक अपने आप ही सुधर जायँगे।

× × ×

कष्ट में तड़पते हुये प्राणी को जिसके निरोग होने की कोई सम्भावना नहीं है। मृत्यु के द्वारा दुख से छुड़ा देना धर्म है।

— महात्मा गांधी।

× × ×

अहिंसा और क्षमा वीर का लक्षण है। जिसमें मरने की शक्ति है वही अपने को मारने से रोक सकता है।

× × ×

मेरे लेखों से तुम भीरुता को अहिंसा मान लो और अपने लोगों की रक्षा करने के धर्म को खो बैठो तो मेरी अधोगति हुये बिना न रहेगी।

× × ×

कायरता कभी धर्म नहीं हो सकती।

× × ×

संसार में तलवार चलाने की जगह जरूर है परन्तु तलवार चलाने वाले का भी क्षय ही होगा।

+ × ×

आत्मबल के सामने तलवार का बल तृणवत है। अहिंसा आत्मा का बल है। अहिंसा का उपयोग करके आत्मा आत्मवत् बनती है और तलवार का उपयोग कर के आत्मा शरीरवत् बनती है। जो इस बात को न समझ सके। उसे तो तलवार हाथ में लेकर भी अपने आश्रितों की रक्षा जरूर करनी चाहिये।

× × ×

शेर, भालू, आदि हिंसक जन्तुओं का नाश आवश्यक है। वह अनिवार्य हिंसा है। अनिवार्य हिंसा अहिंसा बन जाती है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

जो मनुष्य किसी प्राणी को कष्ट पहुँचाने का अभ्यस्त नहीं उसे कोई शत्रु कष्ट नहीं पहुंचा सकता।

—योग दर्शन ४।३४

× × ×

क्रूर और दुखदाई व्यक्ति कभी सच्चे आनन्द को नहीं प्राप्त कर सकता।

—अफलातून।

× × ×

सत्य और अहिंसा से तुम संसार को अपने सामने झुका सकते हो।

× × ×

अहिंसा का अर्थ कायरता नहीं है सच्चा वीर ही अहिंसा का अर्थ समझ सकता है। अहिंसा से जनता को वह शिक्षा मिलती है जिसके द्वारा संकट के समय मिल जुल कर देश की रक्षा करना संभव है।

—महात्मा गांधी।

प्रेम



प्रेम ही जीवन है ।

—स्वामी विवेकानन्द ।

× × ×

बालकों को प्रेम के द्वारा ही आगे बढ़ाया जा सकता है। मेरे हैं यह माने बिना जो प्रेम करता है वह सच्चा प्रेम है। बालक चोरी की आदत प्रेम से ही छोड़ता है भय से नहीं।

—महात्मा गांधी ।

× × ×

हे सौन्दर्य, तू अपने को प्रेम के अन्दर ढूँढ़। अपने दर्पण की मिथ्या प्रशंसा में नहीं। —रवीन्द्र ।

× × ×

परमात्मा ने दुनिया को प्रेम के लिये बनाया है। —वेद ।

× × ×

प्रेम मनुष्यता का दूसरा नाम है।

—भगवान बौद्ध ।

× × ×

घृणा करना शैतानों का काम है। क्षमा करना मनुष्य का स्वभाव है मगर प्रेम करना देवताओं का गुण है।

—भर्तृहरि।

× × ×

प्रेम मनुष्य के लिये सब से बड़ी कमजोरी है।

—चाणक्य।

× × ×

प्रेम से पथ भ्रष्ट मनुष्य सुधर सकते हैं।

—महात्मा कबीर।

जो बार २ प्रेम करता है वह प्रेम करना नहीं जानता।

—तुलसीदास।

× × ×

दुनियां में यदि किसी शिक्षा की आवश्यकता है तो वह शिक्षा केवल प्रेम है।

स्वामी रामतीर्थ।

× × ×

प्रेम संसार के लिये प्रकाशमय दिशा है।

—ईशुमसीह।

× × ×

प्रेम ही स्वर्ग की सीढ़ी है।

—टाल्स्टाय।

× × ×

सब से मेरी एक यही प्रार्थना है कि परस्पर प्रेम करना सीखो।

—हकीम केनफ्यूशिस।

× × ×

संसार में परमेश्वर ही प्रेम है।

—डा० ब्रूनिंग।

× × ×

प्रेम आँखों से नहीं हृदय से देखता है। यही कारण है कि प्रेम का देवता अंधा होता है!

—शेक्सपियर।

× × ×

वह पुरुष विद्वान कहलाते हैं जो प्रेम में पागल होते हैं।

—प्रो० जेसुकिक।

× × ×

प्रेमका देवता खिलौने से खेलता है क्योंकि वह बच्चा है।

—फोर्ड।

× × ×

प्रेम का देवता अंधा पथ प्रदर्शक है। इसके पीछे जो चलता है पथभ्रष्ट हो जाता है।

—कोलेशियर।



सत्योपदेश

चढ़ते हुये का गिरना साधारण बात है परन्तु गिरे हुये का न उठना लज्जाजनक है।

× × ×

अतीत का अनुभव वर्तमान को न सुधार सका तो वह अनुभव व्यर्थ ही समझना चाहिये।

× × ×

साहसी मनुष्य का विकट रास्ता आप ही आप सुगम हो जाता है। —चेम्बरलैन।

× × ×

जो श्रेष्ठ-आचार को ग्रहण कराकर सब विद्याओं को पढ़ा दे वही आचार्य है।

× × ×

जो अपने सत्योपदेश से हृदय का अज्ञान रूपी अंधकार मिटा देवे उसे गुरु या आचार्य कहते हैं ?

—महर्षि दयानन्द।

× × ×

ज्ञानादि गुण कर्म वाले का यथा योग्य सत्कार करना ही पूजा है।

× × ×

जो सत्-असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यवादी सत्य प्रिय, विद्वान् और सबका हितकारी है वही पंडित है।

× × ×

जिसके आने जाने की कोई तिथि निश्चित न हो और जो विद्वान होकर सर्वत्र भ्रमण करके प्रश्नोत्तर के रूप में उपदेश देकर सब जीवों का उपकार करें वही सच्चा अतिथि है।

× × ×

जो अज्ञान हठ, दुराग्रहादि दोष सहित है वह मूर्ख है।

—दयानन्द सरस्वती।

× × ×

अगर तुम सबको खुश रखना चाहते तो अपनी बुरी आदतों को छोड़ दो।

—तुलसीदास।

× × ×

जो सत्य विद्याओं के प्रतिपादन से युक्त हो जिससे मनुष्य सत्य शिक्षा प्राप्त कर सके वही शास्त्र हैं।

× × ×

जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओं से युक्त ऋक संहितादि चार पुस्तक हैं और जिनसे मनुष्यों को सत्यासत्य का ज्ञान होता है वही वेद हैं।

× × ×

जो प्राचीन ऐतरेय, शतपथ, ब्राह्मणादि ऋषि मुनि कृत सत्यार्थ पुस्तक हैं उन्हींको पुराण, इतिहास, कल्प, गाथा, नाराशंसी कहते हैं।

—महर्षि दयानंद।

× × ×

अपने जीवन को यहाँ तक धर्ममय बनाओ कि लोग तुमको धर्म की, निस्पृहता की, लोक सेवा की, अनन्यता की, सात्विक श्रद्धा की, चलती फिरती मूर्ति समझने लगें।

—मैजिनी।

× × ×

यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करे तो उसपर क्रोध न करो बल्कि क्षमा कर दो। अपमान करने वाला यदि बलवान हो तो उसे अवश्य दण्ड दो।

—गुरु गोविन्दसिंह।

× × ×

अपने मित्रों के चुनने में सावधानी से काम लो।

—सिसरो।

+ × ×

बहुत बार ऐसा हुआ है कि पुस्तकों के अध्ययन से मनुष्य ने भविष्य को बना लिया है।

—एमर्सन।

× × ×

अगर तुम बड़प्पन चाहो तो दानी बनो क्योंकि बिना दाना छितराये अन्न पैदा नहीं होता।

—शेखसादी।

× × ×

यदि द्रव्य पास में है तो दान से हाथ न हटाओ। परन्तु द्रव्य पास में न हो तो व्यर्थ दानी मत कहलाओ।

× × ×

वीर लोग एक ही बार मृत्यु के ग्रास होते हैं किन्तु कायर लोग मृत्यु आने के पहिले कई बार मर चुकते हैं।

—शेक्सपियर।

× × ×

आत्म सम्मान की रक्षा हमारा सबसे पहिला धर्म है। इसकी हत्या करके स्वर्ग भी मिले तो वह नर्क है।

—प्रेमचन्द।

× × ×

मनुष्य का मन ही उसे गरीब या अमीर बनाता है।

—शेक्सपियर।

× × ×

बड़े लोगों की जीवनी से लाभ उठाना एक ही जीवन में दो जीवनों का आनन्द लूटने के बराबर है।

—मार्शल।

× × ×

सबसे मित्रवत व्यवहार करो किसी से ईर्ष्या मत करो, इससे मन प्रसन्न होगा।

× × ×

जिसके साथ रहने में तुम्हारे मनमें अहंकार पैदा हो उसका साथ छोड़ दो। जो आदमी तुम्हारे दोषों को दिखलावे उसीके साथ रहो।

—सुकरात।

× × ×

जिसने मन रूपी राक्षस को वश में कर लिया वही श्रेष्ठ पुरुष है।

—मीरा।

× × ×

नम्रता से मनुष्य क्या देवता भी तुम्हारे वश में हो सकते हैं।

— भगवान तिलक।

× × ×

जो निरुत्साही दीन और शोकाकुल बना रहता है उसके सब कार्य नष्ट हो जाते हैं।

—म० बालमीक।

× × ×

स्वाभिमानी और पवित्र हृदयी पुरुष निर्धन होने पर भी श्रेष्ठ गिना जाता है।

—म० विदुर।

× × ×

मनुष्य उसीको कहना चाहिये जो मनन शील होकर स्वात्मवत् दूसरों के सुख दुःख और हानिलाभ को समझे।

× × ×

संतोष, उत्तम वस्तु है परंतु उन्नति के मार्ग में बड़ा भारी रोड़ा है।

× × ×

विचारों को बीज के समान जानो और रक्षा करो उचित जमीन पर पड़ते ही वह उग आवेंगे।

—महर्षि दयानन्द।

× × ×

मनुष्य का आचरण ही उसका मौन किन्तु प्रभाव शील उपदेश है।

—म० शेखसादी।

× × ×

जिसने अपने जीवन को बिलकुल शुद्ध कर लिया है ऐसा एक भी आदमी हजार धर्म प्रचारकों के मुकाबिले में कहीं बढ़ कर काम करता है।

—स्वामी विवेकानंद।

× × ×

मेरी दृढ़ धारणा है कि कोई मनुष्य उस समय तक बड़े काम अथवा राष्ट्रोन्नति में समर्थ नहीं हो सकता, जबतक उसके आचरण सच्चे न हों, और उसके बचनों का मूल्य न हो।

× × ×

सोच समझकर बोलने का अभ्यास करने से वाक् संयम होता है। जिसमें वाक् संयम नहीं वह पद पद पर ठोकरें खाता है और पछताता है। पीछे पछताने की अपेक्षा पहिले सोच विचार कर लेना ही अच्छा है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

अनुभव ही एक मात्र ऐसा शिक्षक है जिसके द्वारा प्राप्त ज्ञान की जीवन में प्रतिदिन आवश्यकता पड़ती है।

× × ×

दूसरों के साथ ठीक वैसा ही व्यवहार करे जैसी कि उसने अपने प्रति आशा की।

× × ×

उचित प्रकार का विनोद सर्वदा लाभदायक होता है। परन्तु इससे सदैव सावधान रहना चाहिये कि कहीं दुष्टाचरण ही को विनोद न समझ लिया जाय।

× × ×

विनोद अथवा प्रसन्नता उस दशा में कदापि नहीं हो सकती जो अधिकतर मद्य सरीखी विषमय वस्तुओं के सेवन के पश्चात् हुआ करती है। दुष्टाचरण द्वारा केवल अनावश्यक लिप्साओं की तृप्ति होती है और इससे सर्वदा शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों का सत्यानाश होता है।

× × ×

उन लोगों से पृथक रहो जो तुम्हें "अच्छा साथी" बनाना चाहते हैं। "अच्छा साथी" का अर्थ कुपथ गामी, अमित-व्ययी, भक्ष्याभक्ष्य भोगी, चरित्र हीन, तथा अनाचारी होता है।

× × ×

"अच्छा साथी" बनाना अमूल्य समय को नष्ट करना है। जीवन का सत्यानाश करना है। थोड़े में यह कहा जा सकता है कि आधुनिक सभ्यता में "अच्छा साथी" का अर्थ "मनुष्यता रहित" होता है।

—बर्नार मेकफेडन

× × ×

"अच्छा साथी" बनाने का अर्थ यह है कि तुमको अवश्य बुरी आदतें ग्रहण करनी पड़ेंगी। शराब पीना, सिगरेट पीना, नाच गाने में भाग लेना। इसके मुख्य अंग हैं। धिक्कार है इस सभ्यता को।

× × ×

क्यों-क्या-कैसा-ये वाक्य वास्तव में बड़े ही महत्वपूर्ण और सारगर्भित हैं। ये ज्ञान वृद्धि के सूचक हैं

—मेकफेडन

× × ×

अपनी कमजोरी न जानने से बढ़कर कोई कमजोरी नहीं है।

+ + +

अगर तुम अच्छा काम कर रहे हो तो किसी के आगे कहने की जरूरत नहीं। काम आप ही तुम्हें नेक नाम देगा।

× × ×

जो अच्छे कामों के करने में तल्लीन हैं उन्हें बुरा बनने का अवसर नहीं मिलता। किसी मनुष्य में उच्च गुणों का होना ही पर्याप्त नहीं है उनका उपयोग भी होना चाहिये।

—सुकरात।

× × ×

यदि तुम उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचना चाहते हो। तो कभी आलसी मत बनो।

× × ×

स्वालम्बन का भाव प्रत्येक मनुष्य की उन्नति का कारण है।

× × ×

हमारा सच्चा व्यवहार ही हमारी सच्ची उन्नति का कारण है।

× × ×

संसार में जिसने जन्म लिया है उसे सैनिक होना चाहिये।

—जवाहर लाल नेहरू।

× × ×

जो मिथ्या ज्ञान मिथ्या भाषण झूठ में आग्रहादि किया है जिससे कि गुण छोड़कर उसके स्थान में अवगुण लगाना होता है वह निंदा है।

—महर्षि दयानन्द।

× × ×

जवानो! तुम एक ही जीवन जिओगे और एक ही मृत्यु पावोगे। किन्तु सावधान! यह दोनों कार्य तुम्हें साहसी मनुष्यों के समान करने चाहिये।

—डी-वेलरा।

× × ×

अपने ऊपर अधिकार पाना सबसे बड़ा गुण है।

—गणेशशंकर विद्यार्थी।

× × ×

आत्माभिमान आत्मा को ऊँचा उठाता है इसी लिये आत्माभिमानी बनना चाहिये। परन्तु अहंकार से दूर रहना चाहिये। यह पतन की ओर ले जाता है।

× × ×

जो पिता अपने बालक को कार्य व्यवहार नहीं सिखाता मानो वह उन्हें चोर डाकू बनना सिखाता है।

× × ×

यदि मनुष्य जीवन को उच्च और विजयी बनाना चाहता है तो उसे अपने ऊपर आने वाली आपदाओं, कठिनाइयों और अपमानोंसे जरा भी नहीं डरना चाहिये, न निराश होना चाहिये।

× × ×

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुरु हैं। इनके उपदेश का जो मनुष्य आदर और श्रद्धा के साथ पालन करता है वह सदा अपने जीवन में विजयी होता है।

गणेशशंकर विद्यार्थी।

× × ×

जो मनुष्य सदा प्रसन्न रहना चाहता है उसको चाहिये कि वह अपनी अवस्था को दूसरों की अवस्था से भला समझे।

—सुकरात।

× × ×

न हलुआ बन कि चट कर जाँय भूके।
न कड़ुवा बन कि जो चक्खे सो थूके॥

—मीर।

× × ×

युवकों को यह शिक्षा दिलाना बहुत जरूरी है कि वे अपने सामने सर्वोत्तम आदर्श रक्खें।

× × ×

मानसिक दुर्बलता सब पापों की जननी है। ऊँचे आचार विचार रक्खो ऊँचे चढ़ते चलो, और ऊँचा जीवन व्यतीत करो।

—सुकरात।

× × ×

सैकड़ों पुस्तकों का ज्ञान दिमाग में भरने से उसकी कीमत भर सकती है परन्तु उसके प्रमाण में कार्य की कीमत अनेक गुणा अधिक है दिमाग में भरे हुये ज्ञान की कीमत केवल कार्य की कीमत के बराबर हैं। बाकी का सारा ज्ञान दिमाग़ के लिये व्यर्थ का भार रूप है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

जो लोग अनजान में गिरते हैं खड़े होने की शक्ति उन्हीं में होती है।

× × ×

अगर तुम्हारी पुकार कोई नहीं सुनता तो तुम अपने रास्ते पर अकेले ही चलते जाओ।

—रवीन्द्र।

× × ×

सच्चा शूरमा वही है जो प्रलोभनों के बीच रहता हुआ मन को वश में करके पूर्ण ज्ञान प्राप्त करता है।

रामकृष्ण परमहंस।

× × ×

स्वाभिमान की रक्षा का भाव मनुष्यत्व का आरम्भिक लक्षण है। मान अपमान की विस्मृति मनुष्यता की पूर्णता का पूर्ण चिन्ह है।

हरिभाऊ उपाध्याय।

× × ×

संसार का सभ्य समाज गुण का पुजारी है परन्तु असभ्य और नीच लोग रूप के पूजक हैं।

+ + +

जो मनुष्य बदला लेना चाहता है वह अपने घाव को ताजा बनाये रखने की फिक्र करता है। जो बदला लेना नहीं चाहता उसका घाव तुरन्त भर जाता है।

—मालानारूम।

+ + +

भूल कर भी कभी कर्ज न लो, इसको एक कठिनाई ही नहीं किन्तु एक विपत्ति जानो। बड़ा कर्ज बड़ी भारी विपत्ति है। छोटे २ कर्ज़ छोटी २ गोलियों के समान हैं जो चारों तरफ से आ घेरते हैं।

—डाक्टर जानसन।

+ + +

जो मूलधन यानी पूँजी को बिना बढ़ाये खाता है वह सदा ही दुखी रहता है। उसकी स्थिति कभी नहीं सुधरती।

—जार्ज हार्वर्ट।

× × ×

जो मनुष्य दो आदमियों के बीच आग लगाता है वह खुद अपने को उसमें जलाता है।

—नेपोलियन।

× × ×

निर्धनता से परोपकार के समस्त द्वार बंद हो जाते हैं और पाप से बचने की शक्ति सर्वथा नष्ट हो जाती है। यह दृढ़ संकल्प कर लो कि दरिद्र नहीं होंगे। —जानसन।

× × ×

जिससे ईश्वर से लेकर पृथ्वी पर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर उससे यथा योग उपकार लेना होता है वही विद्या है।

× × ×

जो विद्या से विपरीत भ्रम अंधकार और अज्ञान रूप है वही अविद्या है।

× × ×

झूठ से छूट कर सत्य की प्राप्ति होती है उसको सत्संग और जिसके द्वारा जीव पाप में फँसे उसे कुसंग कहते हैं।

× × ×

जीव जिसके द्वारा दुख सागर से पार हो वही तीर्थ है।

—दयानन्द सरस्वती।

× × ×

हमारा एक मात्र कर्त्तव्य अपने ध्येय की रक्षा करना ही होना चाहिये।

—महात्मा गांधी।

× × ×

सुन्दर वस्तु को अपनी सुन्दरता स्थिर रखने में सहायता देना ही सच्ची सौन्दर्योपासना है।

× × ×

खतरनाक स्थान सदैव आनंद-दायी होते हैं यदि उनमें रहने वाले खतरनाक न हों।

× × ×

हमेशा खतरे में रहो!

—जवाहरलाल नेहरू।

× × ×

सुख की खोज में मनुष्य जितनी सत्य की हत्या करता है उतना ही वह कष्टों यातनाओं और भीषण विपदाओं में फँसता जाता है।

—स्वामी सत्यदेव।

× × ×

अदूरदर्शिता पश्चात्ताप की जननी है।

—गणेशशङ्कर विद्यार्थी।

× × ×

निरुद्यमी मनुष्य अपनी अधोगति और बरबादी का स्वयं ही कारण है।

—भगवान मनु।

× × ×

ऋण बुरी बला है यह झूठ नीचता कुटिलता चिंता और माया की जननी है। प्रतिष्ठित से प्रतिष्ठित व्यक्ति को भी क्षण भर में अपमानित कर देना इसका साधारण काम है।

—डाक्टर जानसन।

× × ×

हर एक वस्तु में कोई न कोई गुण अवश्य है। संसार की कोई वस्तु निरर्थक नहीं है। हमें सब पदार्थों के गुणों पर तथा अपने दोषों पर सदा दृष्टि रखनी चाहिये।

—महात्मा गोखले।

× × ×

ईर्ष्या से प्रेरित होकर जीव अपने उत्कर्ष में स्वयं बाधक होता है।

—बर्नार मेकफेडन।

× × ×

जिन लोगों ने आज तक सफलता प्राप्त की है वे कभी ईर्ष्या द्वेष के आवेश में आकर बड़बड़ाने वाले नहीं थे।

× × ×

परिश्रम की सभी आदतें अच्छी होती हैं परन्तु मनन करने के परिश्रम की आदत अत्यन्त लाभदायक है।

—बोल्टन हाल।

× × ×

शिष्य का न होना अच्छा, पर कुशिष्य को शिष्य बनाना अच्छा नहीं।

—चाणक्य।

× × ×

धूर्त का कोई आदर मान नहीं करता। धूर्त्त को सम्मान की आशा स्वप्न में भी नहीं करनी चाहिये। संसार में आदर सम्मान है सत्यता, गम्भीरता, बुद्धिमता आदि के लिये, न कि धूर्तता के लिये।

× × ×

जिसे सब लोग हेय की दृष्टि से देखते हैं जिसके प्रति

सबके हृदय में स्वाभाविक घृणा उत्पन्न होती है वह आदर और मान की आशा कैसे कर सकता है।

+ + +

एक छटांक भक्ति एक मन धूर्त्तता से संसार की उन्नति नहीं होती।

× × ×

कुमार्ग में चलने से धूर्त्त को जब एकाधबार सफलता मिल जाती है तो उससे वे अच्छे कार्यों के सर्वथा अयोग्य हो जाते हैं। और उस ओर उनकी तबीयत नहीं लगती। छल धूर्त्तता कपट और धोखा बाजी करना ही उसका पेशा बन जाता है और सच्चे भले मानस तथा धर्म शील मनुष्यों के वे शत्रु बन जाते हैं।

—वर्नार मेकफेडन।

× × ×

देखो, एक नन्हे से फूल को! क्या तुम मनुष्य होकर उसके समान भी संसार की सौंदर्य वृद्धि नहीं कर सकते।

—पद्मानन्द।

× × ×

जो करो विचार पूर्वक, निर्भीकता से स्वतन्त्र रह कर करो। पहिले यह सोच लो कि अपने कल्याण के लिये क्या

करना चाहते हो फिर उसी के अनुसार आचरण करो। देखा-देखी अविचार पूर्वक किया हुआ कार्य निष्फल होता है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

बड़े लोग वही हैं जो गरीबों पर दयालु हुआ करते हैं।

—म० कबीर।

× × ×

कोई मनुष्य यदि तुमसे कोई नई बात कहे जिसे तुम जानते हो, तो जब तक वह उसे समाप्त न करले तब तक चुप रहो।

× × ×

विपत्ति से मनुष्य को घबराना नहीं चाहिये क्योंकि इसका परिणाम अच्छा है। सम्पति और विपत्ति के समय सदैव एक समान रहो और घबराओ मत।

× × ×

जहाँ सादगी है वहीं धर्म और सेवा भाव है। जहाँ शृंगार है चमक दमक है वही दुकानदारी है।

— हरिभाऊ उपाध्याय।

× × ×

निद्रा आने के प्रथम नित्य यह डायरी में नोट करो कि आज दिन भर कौन २ पाप किये। क्या २ उत्तम कार्य किये

और कौन २ कार्य करने से रह गये ऐसा करने से १ महीने बाद पाप कर्म करने की आदत छूट जावेगी।

—अफलातून।

× × ×

जो उपदेश औरों को दो उसके पहिले ही से आप ही उसके अनुसार चलो।

—लुकमान।

× × ×

यदि मुझे किसी नवयुवक को उपदेश देना होता है तो उससे कहता हूं कि अच्छे से अच्छे मनुष्यों की संगति करो।

× × ×

जो मनुष्य संकीर्ण विचारों के होते हैं वे नीच बातों की प्रसंशा और भक्ति करते हैं।

—थेकरे।

+ + +

जो मनुष्य कठिनाइयों से हताश हो जाता है और आपत्ति के सामने सिर झुका देता है उससे कुछ नहीं हो सकता परन्तु जो मनुष्य विजय पाने का संकल्प कर लेता है वह कभी असफल नहीं होता।

—जान हंटर।

× × ×

यदि तुमने किसी से वादा किया है और पूरा नहीं किया तो अपने को उसकी निगाह में हल्का बना लिया।

× × ×

हर एक उच्च श्रेणी के कार्यकर्त्ता में काम करने के मामूली गुणों के सिवाय और गुण भी होना चाहिये। उसमें हर बात को जल्दी समझने की योग्यता होनी चाहिये। और उसको अपने इरादों में पूरा करने में दृढ़ होना चाहिये। चतुराई का होना भी जरूरी है। यद्यपि यह गुण स्वाभाविक है तब भी आलोचना और अनुभव से इसकी उन्नति की जा सकती है।

—सुकरात।

× × ×

गया हुआ वक्त फिर हाथ नहीं आता।

—कविवर हसन।

× × ×

साहस ही मनुष्य का सबसे समर्थ साथी है परन्तु उसका उपयोग या दुरुपयोग करना मनुष्य की योग्यता पर निर्भर है।

— सुकरात।

× × ×



सामाजिक प्रतिबंध

सबको प्रतिज्ञा करना चाहिये कि अब मैं अपनी उन हथकड़ियों और बेड़ियों के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाऊँगा जिन्हों ने कायर समाज के कुसंस्कारों से मुझे बाँध लिया है।

× × ×

उस समय मेरी तेजोद्दीप आत्मा अपनी निबिड़ घृणा रूप अग्नि से आत्मा को कुचलने वाली समाज की निष्ठुर रूढ़ियों को भस्म कर देगी।

× × ×

उस समय मैं उस देवता के तुल्य बन जाऊँगा जिसने दो अरणियाँ रगड़ कर हुताशन को पैदा किया और अपने बंधन पल में छिन्न भिन्न कर डाले।

× × ×

तब तक मेरे तेजस्वी विचार पतित कलुषित समाज के अंधकारमय दायरे के ऊपर उड़ते रहेंगे कि अवसर मिलते ही फूट जाँय और समाज की कुरीतियों को क्षण भर में उड़ादे।

× × ×

मेरे मर्म में यह बात खल रही है कि कुछ वास्तविक वीर आत्मायें मुझे भीरु समझेंगी और कहेंगी कि इस कायर ने बीर भोग्य रणक्षेत्र से मुँह मोड़ा।

× × ×

पर सत्य यह है कि मैं सदा आत्म बलिदान की आराधना कर रहा हूँ कि वह ऐसे सुवर्ण सुयोग पर मेरे जीवन की भेंट स्वीकार करे जब मेरी बलि से सारा समाज प्रदीप्त हो उठे।

(हबशी कवि मार्कफिशर)

× × ×

केवल अपने कठिन उद्योग परम पुरुषार्थ और निरंतर स्वार्थ त्याग ही के द्वारा हम अपने पूर्वजों की, की हुई त्रुटियों का सुधार कर सकते हैं। उनकी त्रुटियों को याद कर आँसू बहाने और हाथ मलने से कुछ लाभ नहीं होने का।

—लाला लाजपतराय।

× × ×

अपने सब सामर्थ्य से दूसरे प्राणियों के सुखी बनाने के लिये जो तन मन धन से प्रयत्न किया जाता है वही परोपकार है

× × ×

जिसमें शुभ गुणों का ग्रहण अशुभ गुणों का त्याग किया जाता है वह शिष्टाचार है।

× × ×

जो सृष्टि से लेकर आज पर्यन्त सत्पुरुषों का वेदोक्त आचार चला आया है कि जिसमें सत्य का ही आचरण और असत्य का परित्याग किया जाय वही सदाचार है।

× × ×

सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

× × ×

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना चाहिये।

× × ×

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालन में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

× × ×

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिये।

—महर्षि दयानन्द।

× × ×

यदि बाल बच्चेदार वेतन भोगी ग्रहस्थ धर्म का प्रचार करने के उपयुक्त होते तो वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की

रचना करके क्यों इन बेचारों को इन्द्रियों के भोग से महरूम रखा गया।

—लाला लाजपत राय।

× × ×

यदि आप पढ़े लिखे और देश प्रेमी है और आपके सामने किसी मुसाफिर पर अत्याचार होता हो तो आप अनेक प्रकार से उसकी सहायता कर सकते हैं।

—महात्मा गांधी।

× × ×

भारतीय तरुण वृन्द ! दीन दुर्बल निराश्रित और अत्याचार के नीचे दबने वाले मेरे बान्धवों के सुख के लिये तुम अपना जीवन दे देना।

—स्वामी विवेकानन्द।

+ + +

जिस समाज में हम उत्पन्न हुये हैं उसके रूढि के अनुसार नियम आचार व्यवहार आदि का प्रतिवंध कितना ही कड़ा क्यों न हो फिर भी वर्तमान अवस्था के अनुकूल ही व्यवस्था करनी योग्य है।

× × ×

इसमें सन्देह नहीं कि हमारे इन विचारों के जानते ही समाज हमें हीनदृष्टि से देखेगा और समाज के सामने हम घोर

अपराधी समझे जायेंगे हमारी शान में हमारे सन्मान में बट्टा लगेगा। परन्तु समाज का इसी में वास्तविक कल्याण है।

× × ×

ऐसी अनेक अड़चनें अनेक बाधायें नित्य प्रति हमारे सन्मुख उपस्थित होती हैं और हम उन्हीं में घुला और पिघला करते हैं। परन्तु चूँ तक करने का साहस नहीं होता। फिर भी हम धोखे में रहते हुये अपने को स्वतन्त्र कहते हैं। कैसी स्वतन्त्रता !

× × ×

छोड़ो अंधकार को ! प्रकाश में आओ ! मानसिक दासत्व की बेड़ियाँ काटो और स्वतन्त्रता के सुन्दर प्रभात का आनन्द लूटो असंस्कृत तथा असम्बद्ध विचारों को मस्तिष्क से निकालो और निर्मल विवेक के उजाले में प्रवेश करो।

× × ×

प्रचलित स्कूल और कालेजों की दशा भी देखने ही योग्य है इनको पुतली घर कहा जाय तो कोई अनुचित न होगा।

× × ×

स्कूल कालेज के विद्यार्थियों को एक पूर्व निर्मित साँचे में तोड़ मरोड़ कर ढाला जाता है। उनके स्वतन्त्र विचार इस कृत्तिम नियम के विरुद्ध आन्दोलन करते हैं। परन्तु उनके प्रकाश

के लिये क्षेत्र नहीं दिया जाता। दुस्साहस पर उनको दंड भी यथेष्ट मिलता है।

× × ×

, वे चलती हुई मशीनों में अपने को छोड़ देने के लिये बाध्य किये जाते हैं फल यह होता है कि शनैः शनैः विचार स्वातन्त्र्य स्वाभाविकता तथा मौलिकता का लोप होने लगता है उनकी बुद्धि आश्रित और विचार परावलम्बी हो जाते हैं।

× × ×

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि स्कूल कालेजों से निकले हुये माल पुतली घरों के माल से कहीं अधिक निकम्मे और निकृष्ट होते हैं।

× × ×

सचमुच अर्वाचीन शिक्षा प्रणाली ने मानव स्वतन्त्रता के वास्तविक रूप को सर्वथा विकृत कर दिया है और इसके मार्ग में यह कंटक रूप हो गई है।

× × ×

ग्रीष्म काल है। प्रचण्ड गर्मी पड़ रही है। चोटी से ऐड़ी तक पसीना चल रहा है। हवा नाम मात्र की नहीं है। कपड़े छूने तक की इच्छा नहीं होती। हमें बाहर जाना है। आवश्यक कार्य है। ओहो ! कैसी दुर्दशा है।

× × ×

बिना सूट बूट के डाटे घर से निकल नहीं सकते ! क्योंकि हम सभ्य हैं हमारी शान में बट्टा लगेगा। कहाँ गई स्वतन्त्रता क्यों नहीं नंग धड़ंग बाहर चले जाते ! क्या आवश्यकता है इतना कष्ट उठाने की।

× × ×

यह तो अपने वश की बात है कि हम अपना कपड़ा पहिने या न पहिने। हम अपने अंग को जैसा चाहें रक्खें। परन्तु नहीं ऐसा कर कैसे सकते हैं ? सभ्यता दरवाजे पर मुँह फाड़े खड़ी है। मारे भय के पाँव बाहर नहीं पड़ते। कैसी अवस्था है। कैसी अमोघ परतन्त्रता है।

—बर्नार मेकफेडन।

× × ×

मनुष्य समाज इस प्रकार भेड़ चाल क्यों जा रहा है ! क्यों वह अविचारी मनुष्यों के नेतृत्व में अपना जीवन बरबाद कर रहा है इसका कारण यही है कि उसमें विचार स्वातन्त्र्य नहींहै।

+ × ×

विषय भोग का विचार करने से आसक्ति होती है। आसक्ति से पाने की इच्छा उत्पन्न होती है। इच्छा की पूर्ति न होने पर क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से अविचार और अविचार से स्मरण शक्ति का ह्रास होता है। स्मरण शक्ति के

ह्रास से बुद्धि का नाश होता है और बुद्धि के नाश होने से सर्व नाश हो जाता है।

—गीता।

× × ×

मनुष्य समाज की विशेष विपत्तियों का मूल कारण है सर्व साधारण में फैली हुई कुरीतियाँ और आदतें और विषय-वासना का आधिक्य। मादक द्रव्यों के प्रयोग ने उनकी विवेक शक्ति को कलुषित और अपंगु कर दिया है।

× × ×

इन विषमय पदार्थों के अतिरिक्त मानसिक दुर्बलता का एक और कारण है, आवश्यकता से अधिक भोजन। यह भी महान दुर्व्यसन है।

× × ×

निस्सन्देह वे महान मूर्ख हैं जो अपनी कठिनाइयों को कम करने के लिये शराब अथवा अन्य किसी नशे का सेवन करतेहैं

× × ×

जितना ही अधिक क्षुद्र संकीर्ण तथा मलीन विचारों में लीन रहोगे उतनी ही इनकी वृद्धि होगी। और तुम्हारी मानसिक शक्ति का ह्रास होगा।

—मेकफेडन।



वैधव्य कठोर दण्ड ।

हिन्दू समाज की विधवा त्याग और पवित्रता की पूर्ति है वह माता की तरह सबके लिये पूजनीय है उसे अशुभ समझने वाला हिन्दू-समाज का घोर अपराध करता है। शुभ कार्यों में उसकी उपस्थिति और आशीर्वाद प्राप्त करने का अवश्य प्रयत्न करना चाहिये। पवित्र विधवा को समाज का भूषण समझ कर उसके मान प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिये।

—महात्मा गांधी।

× × ×

विधवा त्याग की मूर्ति है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उससे जबरदस्ती वैधव्य पालन कराया जाय। बलपूर्वक कराया गया त्याग उसकी दिव्यता को नष्ट कर देता है और

उसे पूजनीय तथा आदर्श बनाने के बदले अन्त में दयापात्र बना देता है।

× × ×

एक विधुर का जितना अधिकार पुनर्विवाह करने का माना गया है उतना ही विधवा को भी है।

× × ×

किसी भी स्त्री के सतीत्व को भंग करने के पूर्व मर जाना ही उत्तम कर्म है। किसी स्त्री को पाप कर्म से बचा लेना सबसे बड़ा काम है। —महात्मा गांधी।

× × ×

बाल विधवायें हिन्दू समाज के लिये अमिट कलंक हैं। इनपर जो २ सामाजिक अत्याचार किये जाते हैं उनका वर्णन करने के लिये पत्थर का हृदय और वज्र की लेखनी चाहिये।

—स्वामी दर्शनानंद।

× × ×

विधवाओं का पुनर्विवाह शास्त्रानुसार वैध है।

—ईश्वर चंद विद्यासागर।

× × ×

विधवाओं के पुनर्विवाह के सम्बन्ध में जो मनुष्य जान बूझ कर शास्त्र के अभिप्राय को अन्यथा प्रगट करता है वह धोखेबाज है। —म० म० पं० महेशचन्द्र।

× × ×

यदि पुरुष पत्नी वियोग के बाद फिर विवाह करने का अधिकारी है तो साम्यनीति के अनुसार स्त्री भी पतिवियोग के बाद पुनर्विवाह करने की अधिकारिणी अवश्य है।

× × ×

पत्नी वियोगी पति और पति वियोगिनी पत्नी दोनों ही इच्छा होने पर पुनर्विवाह के अधिकारी हैं।

---बंकिम चंद।

× × ×

मेरे कोई विधवा पुत्री नहीं है यदि होती तो मैं अवश्य उसका पुनर्विवाह करता और उसकी वैधव्य दशा का अनुभव करके मुझपर या समाज पर उसका कुछ ही प्रभाव क्यों न पड़ता, पर मैं उसकी बिलकुल परवा न करता।

— डा० राजेन्द्र लाल मित्र।

× × ×

क्षता और अक्षता दोनों का पुनः संस्कार होना चाहिये।

— याज्ञवल्क्य स्मृति।

× × ×

कर कुलीन के बहुत ब्याह बल वीर्य नशायो।
विधवा ब्याह निषेध कियो व्यभिचार मचायो॥

—भा० हरिश्चन्द्र।

× × ×

पहिली स्त्री के वियोग के बाद कुमारी कन्या के साथ विवाह करना पूर्णचंद में कलंक और फूल में काँटे के समान एक बड़ी भारी धृष्टता है जो कदापि क्षमा के योग्य नहीं।

— महादेव गोविन्द रानाडे।

× × ×

समाज का स्वास्थ्य ठीक करने के लिये विधवा विवाह की बड़ी आवश्यकता है।

—जस्टिस गणेशशंकर वार्कर।

× × ×

स्त्री केवल एक ही विवाह कर सकती है और पुरुष जितने उसका जी चाहे। यदि कोई सहृदय समाज हितैषी इस विषमाचार को अप्राकृतिक और असमंजस समझ कर इसका प्रतिवाद करे तो वह दोषी नहीं हो सकता।

—सर टी० मुथु स्वामी आयर।

× × ×

विधवा स्त्री और विपत्नीक पुरुष को यदि उनका मन चाहे तो दूसरा विवाह करने में कोई पाप नहीं।

— श्रद्धाराम फुल्लौरी।

× × ×

जिस कामदेव के वश होकर विश्वामित्र, पराशर, शिवजी, ब्रह्माजी, इन्द्र पागल हो गये क्या उसका मुकाबला करने के

लिये हम इस अबला जाति को जिसमें स्वभावतः आठ गुणी अधिक काम चेष्टा है कैसे खड़ा करते हैं ?

—गोपाल शर्मा ।

× × ×

मैं विधवा विवाह को शास्त्रोक्त मानता हूँ ।

--राधाचरण गोस्वामी ।

× × ×

मैं सर्वथा विधवा विवाह के पक्ष में हूं विधवाओं का पुनर्विवाह जरूर होना चाहिये । ऐसा न करना मैं मनुष्यता के विरुद्ध समझता हूं ।

--डा० तेजबहादुर सप्रु ।

× × ×

जिन बालिकाओं को अभाग्य वश अपने पति के साथ रहने का अवसर नहीं मिला है, उन्हें केवल विवाह करने की आज्ञा ही नहीं है किन्तु उनके लिये उत्साहित भी करना चाहिये ऐसी लड़कियों को तो विधवा ख्याल भी न करना चाहिये ।

× × ×

वे विधवायें जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है या जो अभी युवती हैं उन्हें पुनर्विवाह की आज्ञा देनी चाहिये ।

× × ×

विधवाओं को लोग अशुभ समझते हैं किन्तु इसके विपरीत उन्हें पवित्र समझना चाहिये।

—महात्मा गांधी।

× × ×

जो विधवायें विवाह करना चाहें उनके मार्ग में अड़चनें न होनी चाहिये।

—कृष्णकान्त मालवीय।

× × ×

लाखों विधवायें हिन्दू जाति के नाम पर रो रही हैं। यदि शीघ्र ही इस भयंकर भूल का सुधार न किया जायगा तो हिन्दू जाति का संसार से नाम मिट जायगा।

—रमाशंकर अवस्थी।

× × ×

मैंने जहाँ तक वेदों का अध्ययन किया है मुझे कोई भी ऐसा मन्त्र नहीं दीख पड़ा जिसमें बाल विवाह की आज्ञा और विधवा बिवाह का निषेध हो।

—प्रो० मैक्समूलर।

× × ×

भारत में ये कई लाख वेश्यायें कौन है ? हम भारतवासियों के घरों की विधवायें हैं। हमारी ही बहिनें बेटियें तथा संतति

हैं हमारी ही असावधानी निर्दयता और निष्ठुरता के कारण उनकी यह दशा हुई है।

—देश दर्शन पृ० १८०।

× × ×

जिनका मन विधवा नहीं हुआ है उसका शरीर विधवा कैसे हो सकता है।

× × ×

यह कहना कि १५ साल की बालिका समझ बूझकर वैधव्य का पालन करती है अपनी उद्धतता और अज्ञान को प्रगट करना है। वह क्या जान सकती है कि वैधव्य क्या चीज है? माता पिता का धर्म है कि उसके विवाह के लिये सहूलियत कर दें।

× × ×

विधवा को जबरदस्ती रोकने में न तो उसके कुटुम्ब की रक्षा हो सकती है न उसके धर्म की।

× × ×

यह गरीब दुखिया पतिव्रत धर्म को क्या जाने? प्रेम उनके लिये अज्ञात वस्तु है। सच्ची बात तो यह कहनी होगी कि इनका विवाह कभी नहीं हुआ था।

× × ×

सच्ची हिन्दू विधवा एक रत्न है। —चाणक्य।

× × ×

बाल विधवाओं का अस्तित्व हिन्दू धर्म के ऊपर एक कलंक है।

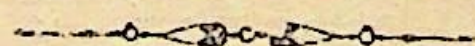
× × ×

अगर ५० वर्ष का विधुर खुशी से विवाह कर सकता है तो उसी उम्र की विधवा को भी यही अधिकार होना चाहिये।

—चाणक्य।



अस्पृश्यता



बहुत से लोगों का विचार है कि मैंने जिस समय तथा जिस तरीके से इस समस्या को उठाकर सत्याग्रह की लड़ाई के मार्ग में अड़चन डाली वह बहुत बड़ी गलती थी। परन्तु मैं समझता हूँ कि यदि मैं और किसी मार्ग का अनुसरण करता तो मैं अपने को ही धोखा देता।

× × ×

अस्पृश्यता हिन्दू धर्म का अंग नहीं है बल्कि उसमें घुसा हुआ एक महान दोष है, अन्धविश्वास है, पाप है, और उसको दूर करना प्रत्येक हिन्दू का धर्म है। परम कर्तव्य है।

+ + +

वर्ण तो चार ही हो सकते हैं इसलिये अस्पृश्यों का समावेश इन्हीं चार वर्णों में होना चाहिये।

× × ×

यदि अस्पृश्यता जीती रही तो हिन्दू धर्म मर जायगा। और यदि हिन्दूधर्म को जीना है तो अस्पृश्यता को अवश्य मारना होगा।

—महात्मा गांधी।

× × ×

हरिजनों में जो बुरी आदतें दिखाई पड़ती है सवर्ण हिन्दू ही उसके जिम्मेदार हैं।

× × ×

प्रत्येक माता अपने बच्चे की मेहतरानी होती है। और आधुनिक चिकित्सालय का प्रत्येक विद्यार्थी चमार का काम करता है। इसलिये कि उसे आदमी की लाश चीरनी और खाल उतारनी पड़ती है। पर उनके धन्धों को हम पवित्र कर्म मानते हैं।

× × ×

साधारण भंगी चमार का धन्धा भी माताओं और डाक्टरों के कार्यों से कम पवित्र और कम उपयोगी नहीं है।

× × ×

असत्य के समान अस्पृश्यता भी स्वयं सिद्ध पाप है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

श्वपच-शवर खल यवन जड़-पामर कोल किरात।
राम कहत पावन परम होत भुवन विख्यात॥

—तुलसीदास।

× × ×

हैं शेर अग्नि सर्प न विच्छू न भूत हैं।
श्रीराम की संतान हैं कैसे अछूत हैं!

—पोल प्रकाशक।

× × ×

अस्पृश्यता का आधार जन्म और जाति को न मान कर व्यक्तियों के वाह्य आचरण को मानना चाहिये।

—डा० भगवानदास।

× × ×

मैं बार बार कह चुका हूं कि यदि इस जन्म में मुझे मोक्ष न मिले तो मेरी आकांक्षा है कि अगले जन्म में भंगी के घर मेरा जन्म हो।

× × ×

मैं इस बात को नहीं मानता कि भंगी कोई पतित योनि

है। ऐसे कितने ही भंगी देखे हैं जो पूज्य हैं। और ऐसे कितने ही ब्राह्मण देखे हैं जो पूजनीय नहीं है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

शुनिश्चैव श्वपाके च पंडिताः सम दर्शिना।

—गीता।

× × ×

भंगी को भी सोने की जगह चाहिये ही। साफ सुथरी हवा और पानी चाहिये इन बातों में वह ब्राह्मण ही के समान हैं। किसी भंगी को सांप ने काटा हो तो जरूर उसकी सेवा करूंगा। भंगी को यदि मैं जूठन खिलाऊं तो मैं पतित हूंगा।

—महात्मा गांधी।

× × ×

मैंने यह कभी नहीं कहा कि अन्त्यजों के साथ रोटी बेटी का व्यवहार रक्खा जाय। हालाँ कि मैं रोटी का व्यवहार रखता हूं। बेटी व्यवहार के लिये मेरे पास गुंजाइश नहीं।

× × ×

हिन्दुओं ने अस्पृश्यता को अंगीकार करके भारी पाप किया है। इसका प्रायश्चित उन्हें करना चाहिये। मैं अस्पृश्यों की शुद्धि जैसी किसी वस्तु को नहीं मानता। मैं तो अपनी ही शुद्धि का कायल हूं।

× × ×

अगर हिन्दूधर्म को इस कलंक से छुड़ाते हुये मेरी मौत हो जाय तो मैं समझता हूं उसमें कोई खास बात नहीं।

× × ×

जिस धर्म में नरसी मेहता जैसे लोग हुये हैं उसमें अस्पृश्यता का कोई स्थान नहीं होना चाहिये।

—महात्मागांधी।

× × ×

यदि हमें क्रियावादी होना है तो संसार में जो परिवर्तन हुये हैं उनका अनुकरण करना चाहिये।

—जवाहरलाल नेहरू।

× × ×

छुआछूत का कलंक हिन्दू धर्म में से हमने अगर जड़ मूल से नहीं मिटाया तो इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति का नाश होकर रहेगा।

—महात्मा गांधी।

× × ×

जो जन्म से लेकर मरण पर्यन्त बनी रहे जो अनेक व्यक्तियों में एक रूप से प्राप्त हो जो ईश्वर कृत अर्थात् मनुष्य, गाय, अश्व वृक्षादि समूह हैं वे जाति शब्दार्थ में लिये जाते हैं।

× × ×

जो विचार के बिना किसी कार्य को न करे वह मनुष्य है।

× × ×

जो श्रेष्ठ स्वभाव धर्मात्मा परोपकारी सत्य विद्यादि गुण युक्त और आर्यावर्त देश में सब दिन रहने वाले हैं वे आर्य हैं।

× × ×

अनार्य अर्थात् अनाड़ी, आर्यों के स्वभाव और निवास से प्रथक डाकू-चोर हिंसक जो दुष्ट मनुष्य हैं वह दस्यु हैं।

—महर्षि दयानंद।

× × ×

अछूतपन ही देश को पराधीनता की बेड़ी में जकड़ रखता है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

दरिद्र अज्ञानी और असमर्थ को ही अपना देवता मानो इन्हीं की सेवा में परमधर्म जानो।

—स्वामी विवेकानन्द।

× × ×

इस समय भारतवर्ष में केवल एक जाति है और वह है गुलाम जाति है। अस्पृश्यता वर्णाश्रम धर्म के सभी सिद्धान्तों के विरुद्ध है। हिन्दू धर्म में तो अस्पृश्यता थी ही नहीं।

—सीताराम शास्त्री।



साम्प्रदायिक वैमनस्य

जब तक हम आपस में डरा करेंगे तब तक झगड़े होते ही रहेंगे। ज़हाँ डरपोक होते हैं वहाँ डराने वाले हमेशा मिल ही जाते हैं। हमको समझ लेना चाहिये कि जब तक हम डरते रहेंगे तब तक हमारी रक्षा कोई न करेगा।

× × ×

मनुष्य का डर रखना यह सूचित करता है कि हमारा परमेश्वर पर अविश्वास है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

हमको दो में से एक बात प्राप्त करनी होगी यदि हम ऐसा न करेंगे तो हमारा नाश हो जाने की सम्भावना है।

× × ×

यदि हम मुसलमानों के दिल को जीत लेना चाहते हैं तो हमें तपश्चर्या करनी होगी, हमें पवित्र बनना होगा। अगर वह हमारे साथ लड़ें तो हमें उलट कर प्रहार न करते हुये हिम्मत के साथ मरना होगा।

—महात्मा गांधी।

\+ + +

मुसलमानों को चाहिये कि वे हिन्दुओं के खातिर गो वध न करें और हिन्दू मुसलमानों से छूत न माने।

—मौलाना हसरत मोहानी

× × ×

मुसलमान यदि हिन्दुओं के लिये गाय को बचाना अपना धर्म समझें तो गाय को बचावें। चाहे हिन्दू अच्छा सलूक करें या बुरा। मुसलमान चाहें गो वध करें या न करें वे मुसलमानों को अछूत न माने।

× × ×

इसलाम में ऐसा कोई फरमान नहीं है जिससे दूसरों के बाजे को बंद करना लाजिम हो, इसलिये दूसरे मजहब के बाजे बजाने से इसलाम धर्म को कोई धक्का नहीं पहुचता।

—महात्मा गांधी।

× × ×

भय अविश्वास और द्वेष ही सब असंतोष के कारण है।

इन्हीं अवगुणों के कारण सभी झगड़े बखेड़े होते हैं। संसार में तभी शांति हो सकती है जब यह दुर्गुण दूर हो जायें।

—हरिभाऊ उपाध्याय।

× × ×

शास्त्रार्थ के बखेड़े में हम इतने अधिक पड़ गये हैं कि हमने कुछ का कुछ कर डाला है धूल का धान कर देने के बदले धान की धूल कर डाली है। चावल छोड़ छिलके में चिपट गये हैं। मक्खन को छोड़ छाछ के पीछे पड़ गये हैं।

—महात्मा गांधी।



गृहस्थाश्रम

गृहस्थाश्रम भोग विलास के लिये हैं, यह भ्रमपूर्ण है। हिन्दूधर्म की सारी व्यवस्था ही संयम की पुष्टि के लिये है। इसका अर्थ हुआ कि भोग विलास कभी हिन्दूधर्म में अनिवार्य हो ही नहीं सकता। गृहस्थाश्रम में भी सादगी और संयम दूषण नहीं, बल्कि भूषण ही समझे गये हैं।

× × ×

स्त्री पुरुष में प्राकृतिक भेद भले ही हों और इस कारण नित्य जीवन में उनके कर्त्तव्य भी भले ही भिन्न भिन्न हों फिर भी दोनों में न कोई ऊँचा है न नीचा, बल्कि समाज के लिये दोनों एक से महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठा-पात्र अंग हैं।

—महात्मा गांधी।

× × ×

स्त्री अबला नहीं है यदि अपनी शक्ति को पहचान ले तो पुरुष से भी अधिक सबला है। वह माता होकर जिस प्रकार बालक का जीवन बनाती है और पत्नी होकर जिस प्रकार पति को आगे चलाती है अधिकाँश में पुरुष उसी प्रकार के बनते हैं।

+ + +

स्त्री जाति को सार्वजनिक कार्यों में पुरुष के बराबर ही योग देना चाहिये। मद्यपान निषेध, पतित स्त्रियों का उद्धार आदि कितने ही ऐसे काम हैं जिन्हें स्त्री ही अधिक सफलता के साथ कर सकती हैं।

× × ×

विवाह हो जाने से सब तरह के भोग विलास करने की छुट्टी मिल जाती है यह विचार पापमय है। स्त्री पुरुषों का भोग एक ही उद्देश से धर्मयुक्त हो सकता है अर्थात् सन्तानेच्छा। इस इच्छा को पूर्ण करने की शुद्ध विधि का नाम है विवाह।

× × ×

बिना विचारे संतान बढ़ाते रहना, या उसकी इच्छा करते रहना जड़ता का चिन्ह है।

× × ×

आज बिना विचारे होने वाली संतति वृद्धि को रोकने की बहुत आवश्यकता है। परन्तु उसका धर्मयुक्त मार्ग एक ही है—ब्रह्मचर्य। —महात्मा गांधी।

× × ×

सन्तति नियमन के कृत्तिम उपाय धर्म, तथा नीति के विरुद्ध और परिणाम में विनाश की ओर ले जाने वाले हैं। इससे समाज का अधः पात होता है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

बेटी विवाह के विषय में संयम सुख और व्यवस्था कायम रखने की दृष्टि से अपने ही वर्ण में विवाह करने की मर्यादा होना उचित है। इस लिये साधारण नियम तो स्ववर्ण विवाह का ही ठीक है। वर्णान्तर विवाह को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता नहीं।

× × ×

परन्तु जो वर्णान्तर विवाह करता है वह पतित हो जाता है या बहिष्कार का पात्र है यह ख्याल ठीक नहीं।

× × ×

वर्णान्तर विवाह से जो प्रजा उत्पन्न हो उसका दूसरा वर्ण या जाति बनाना ठीक नहीं है। उसका समावेश चार वर्णों में ही हो जाना चाहिये। अर्थात् चाहे पिता के वर्ण में हो चाहे माता के।

—महात्मा गांधी।

× × ×

प्रत्येक कुटुम्ब के पिता अर्थात् नेता को अपने मितव्ययी पड़ोसी का अनुकरण करना चाहिये और उन पुरुषों के जीवन

से लाभ उठाना चाहिये जो अपनी आमदनी उत्तम रीति से खर्च करते हैं।

—सुकरात।

× × ×

काम मनुष्य को अंधा बना देता है उसकी विचार शक्ति को मूर्छित कर देता है उसके लिये सारा संसार अंधकार मय हो जाता है।

× × ×

पति और पत्नी के बीच यदि कुछ अप्रियता उत्पन्न हो जाय तो वह पारस्परिक नम्रता से ही दूर करना चाहिये।

—टाल्स्टाय।

× × ×

जिस प्रकार पक्षी कभी एक पंख से नहीं उड़ सकता, उसी प्रकार स्त्री जाति का अभ्युदय हुये बिना भारत की भलाई होने की सम्भावना नहीं।

—स्वामी विवेकानन्द।

× × ×

यदि आप विवाहित हैं तो याद रक्खें कि आप की पत्नी आप की मित्र, सहचरी और सहधर्मिणी है, केवल भोग विलास का ही साधन नहीं।

—महात्मा गांधी।

× × ×

एक ओर पुरुष मातृ शक्ति के रूप में स्त्री की पूजा करता है तो दूसरी ओर स्त्री अपने अनुपम पातिव्रत धर्म का आदर्श उपस्थित करती है। यह दोनों भाव भारतीय स्त्री पुरुषों को एक अत्यन्त कोमल अलक्ष्य स्नेह सूत्र में बाँध देते हैं।

—महात्मा एण्डरूज।

× × ×

पत्नी का न होना अच्छा, परन्तु दुष्टा स्त्री का पत्नी होना अच्छा नहीं।

—चाणक्य।

× × ×

बड़ भागनी और धर्मात्मा स्त्रियाँ आदरनीय, और घर का प्रकाश होती हैं। वह घर की लक्ष्मी हैं इसलिये इनकी विशेष रूप से रक्षा होनी चाहिये।

—महात्मा विदुर।



भाषा भेष और साहित्य

भाषा शुद्ध साहित्य तथा पवित्र भाव प्रचार करने के लिये हैं। भाषा मानसिक व्याधियों का इलाज करने के लिये है। भाषा समाज में उन्नत विचार फैलाने के लिये है इसलिये गंदी और अश्लील पुस्तकें रचने वाले अपनी मातृ भाषा के शत्रु हैं।

× × ×

जो व्यक्ति भाषा जैसे पवित्र साधन को अपवित्र बनाता है और साहित्य जैसी राष्ट्र शक्ति को कमजोर करने का उद्योग करता है वह दुष्ट है।

—स्वामी सत्यदेव।

× × ×

वही साहित्य सेवा सार्थक है जिससे वस्तुतः लोकोपकार हो, सज्जनों का मनोरंजन हो, जनता में शुद्ध भाव का संचार हो, समाज में सदाचार का प्रचार हो, आबाल वृद्ध नर नारी नैतिक उपदेश सीखें। सर्व साधारण में एकत्व और सद्भाव फैले समाज संगठन में सहायता मिले आत्मोन्नति देशोन्नति का मार्ग सूझे तथा ईश्वर प्रेम का विकाश हो।

× × ×

जिसकी साहित्य सेवा ने लोगों की मानसिक उन्नति में सहारा नहीं दिया और जो जन साधारण में निर्दोष प्रसन्नता का उत्तम साधन न बन सकी तथा साहित्यसेवी की अनुरागमयी प्रबुद्ध प्रतिमा को सुख शांतिवर्धक चमत्कार न दिखा सकी वह साहित्यसेवा राष्ट्र की हानि करनेवाली है।

—रमेशचंददत्त।

× × ×

जिस राष्ट्र का भाषा और साहित्य नष्ट हो जाता है वह जाति भी नष्ट हो जाती है।

—स्वदेश बान्धव।

× × ×

कामुकता के भावों से भरे उपन्यास और पत्र पत्रिकायें पढ़ना छोड़ दो। उन अमर रचनाओं को पढ़ो जो संसार के

लिये जीवन प्रद हैं। समय पर काम देने और पथप्रदर्शन के लिये एक पुस्तक को सदा के लिये अपनी सहचरी बनालो।

—महात्मा गांधी।

× × ×

है पण्डितों की राय यह "संगीत भी साहित्य है"।
श्रुतिमार्ग से मन को सुधा रस वह पिलाता नित्य है॥
विष किन्तु उसमें भी यहाँ हमने मिला कर रख दिया।
हतभाग्य घुलघुल कर मरा जिसने कि यह रस चखलिया॥
कविता तथा संगीत ने हमको गिराया और भी।
सच पूछिये तो अब कहीं हमको नहीं है ठौर भी॥

× × ×

उद्देश्य कविता का प्रमुख शृंगार रस ही हो गया।
उन्मत्त हो कर मन हमारा अब उसी में खो गया॥
कवि कर्म कामुकता बढ़ाना रह गया देखो जहाँ।
वह बीर रस भी स्मर समर में हो गया परिणत यहाँ॥
भगवान को साक्षी बना कर यह अनंगोपासना।
है धन्य ऐसे कविवरों को धन्य उनकी वासना॥

—मैथिलीशरण गुप्त।

× × ×

जिस प्रकार पक्षी अपनी बोली त्याग कर मनुष्य की बोली बोलने के कारण अपनी स्वतन्त्रता छुड़ा कर लोहे के पिंजड़े में कैद कर दिये जाते हैं उसी प्रकार जो देश निज

भाषा को त्याग कर विदेशी भेष भाषा को व्यवहार में लाता है वह निश्चय ही पराधीन हो जाता है।

× × ×

स्वदेशी भेष और भाषा ही राष्ट्र की जान है जो देश इनको त्याग देता है वह पराधीन हो जाता है।

× × ×

देश की राष्ट्र भाषा को नष्ट करना ही उसे पंगु बनाना है।

—लाला लाजपतराय।

जीवन मरन

मेरा प्रायश्चित एक विदीर्ण और क्षत विक्षत हृदय की प्रार्थना है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

मृत्यु जीवन का अंतिम अतिथि है उससे डरने का मनुष्य ने अपना स्वभाव सा बना लिया है। परन्तु वास्तव में भय का कोई कारण नहीं।

—जवाहरलाल नेहरू।

× × ×

स्वेच्छा मरण ही मुक्ति है।

— महात्मा गांधी।

× × ×

पेट के लिये जीने से मरना कहीं अच्छा है।

—पोलनयो।

× × ×

जिसमें किसी शरीर के साथ संयुक्त होकर जीव कर्म करने में समर्थ होता है उसे जन्म कहते हैं। जिस शरीर को प्राप्त होकर जीव क्रिया करता है उस शरीर और जीव का किसी काल में जो वियोग हो जाना है उसको मरण कहते हैं।

—दयानन्द सरस्वती।

× × ×

विस्तार ही जीवन और संकोच ही मृत्यु है। प्रेम ही जीवन द्वेष ही मृत्यु है।

— स्वामी विवेकानन्द।

× × ×

जीवन संग्राम में सफलता की कामना रखने वालों को अत्यन्त विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

× × ×

जीवन संग्राम सदैव भयंकर रूप धारण किये रहता है बिना किसी की प्रतीक्षा किये हुये यह निर्दयता तथा निष्ठुरता-पूर्ण शक्ति के साथ चलता रहता है। हम लोगों को इसमें अवश्य भाग लेना चाहिये चाहे सबका सत्यानाश ही क्यों न हो जाय।

× × ×

स्वावलम्बन सीखो। अपना जीवन स्वयं बनाओ। अपने नियमों का पालन करो। सारे संसार की चिन्ता न करो।

—वर्नार मेकफेडन।

× × ×

हँसो! देखो संसार तुम्हारे साथ हँसता है। रोओ, तुम अकेले बैठ कर रोते हो।

—एला हीलर विलकाक्स।

× × ×

जापानियों से शिक्षा लो। यदि उनको तुम किसी ऊँचे स्थान से गिरा दो। वह गिरते ही हँसते हुये उठ खड़े होंगे। उसके पैर में चोट लगी है परन्तु वह प्रगट नहीं होने देंगे।

× × ×

आधुनिक सभ्यता के कतिपय महारथी ठट्ठा मार कर हँसना कोरी असभ्यता समझते हैं। उनकी हँसी की हद मुसकरा देने अथवा अधिक से अधिक दाँत दिखा देने में है।

+ + +

ऐसी इज्जत ऐसी सभ्यता को पानी में बहादो हवा में उड़ा दो, जमीन तले गाड़ दो। हँसने की आदत डालो। खूब दिल खोल कर हँसना सीखो। निस्संकोच होकर हँसो। ठट्ठा मार कर हँसो, हँसने में भारी गुण है। यदि संसार तुम्हारी शक्ति को नहीं जानता तो उसे अनभिज्ञ रहने दो।

—वर्नार मेकफेडन।

× × ×

मनुष्य अकेला ही जन्म मरण को पाता है। सुख दुख भोगता है नरक में पड़ता है और मोक्ष पाता है। कोई किसी का सहायक नहीं।

—चाणक्य।

× × ×

संघर्ष जीवनमय और जीवन संघर्षमय है।

× × ×

यदि अपनी जीवन वाटिका की शोभा चाहो तो उसमें स्वदेश प्रेम का वृक्ष लगाओ और उसे राष्ट्रभक्ति के सुधामय जल से सींचते रहो।

—टाल्स्टाय।

× × ×

जीवन का भरोसा नहीं, इसलिये जिस कर्म से (वृद्धावस्था) में खाट पर पड़कर दुख भोगना पड़े उस कर्म को कभी न करे।

—महात्मा विदुर।



राजनैतिक



अँग्रेज जाति के एक २ बालक की रग रग में देश हितैषिता तथा स्वजातीयता के अनुराग का रक्त धधक रहा है हर एक मनुष्य चाहे वह युवा हो या वृद्ध नित्य यही विचार करता है कि स्वजातीय रक्षा का भार उसके माथे पर है। हमको उनसे सबक लेना चाहिये।

× × ×

विदेशी मुसलमानों ने आर्य जाति को पराजित इस कारण से किया कि उस समय उनकी जाति में विद्या सभ्यता तथा शस्त्रविद्या का प्रचार उत्तम श्रेणी का हो रहा था और धर्मपक्ष भी यथेष्ट से अधिक था। आर्य जाति इस कारण से पराजित हुई कि धर्म की अवनति और मिथ्या बातों की वृद्धि ने इस जाति को युद्ध के अयोग्य कर दिया था।

+ + +

विदेशी मुसलमान बादशाह विद्या बल से लाभ उठाकर अपना राज्य प्रतिदिन बढ़ाते जाते थे परन्तु जब कभी इन लोगों ने केवल अपने पुरुषार्थ पर अभिमान करके काम किया तो उन्हें उसी क्षण वीर आर्यपुत्रों ने युद्ध में उनको अधोमुख गिराया है।

× × ×

जो मनुष्य दासत्व से छुटकारा पाने तथा स्वतन्त्र होने का यत्न जानता है उसे कोई दास नहीं बना सकता।

—लाला लाजपतराय।

× × ×

यदि स्वतन्त्रता जो जीवन की मुख्य सामग्री है मेरे पास न हो तो मेरा मिट जाना ही संसार के लिये श्रेयस्कर है।

—सुकरात।

× × ×

छोटे लोग जब बड़े पदों पर पहुंच जाते हैं तब अनीत पर चलने लगते हैं।

—मौलाना रूम।

× × ×

किसी भी देश की सभ्यता का निर्णय वहाँ की सामाजिक और राजनैतिक स्थिति देखकर ही किया जा सकता है।

—चार्ल्स मीरियर।

× × ×

विदेशियों के आर्यावर्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना पढ़ाना वा बाल्यावस्था में अस्वयम्बर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण वेद विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं।

× × ×

जब आपस में भाई भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी है आकर पंच बन बैठता है।

× × ×

आपस की फूट से कौरव पांडव और यादवों का सत्यानाश हो गया परन्तु अबतक वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुखसागर में डुबा मारेगा?

—महर्षि दयानंद।

× × ×

स्त्रियाँ, जुआ, शिकार, सुरापान, कठोर बचन, कठोर दण्ड और धन का दुरुपयोग राजा को छोड़ देना चाहिये।

× × ×

संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय यह राजनीति के छः गुण हैं।

× × ×

शत्रु को, जो वश में आ चुका हो उसे अवश्य मार डालना

चाहिये। यदि उस समय मारने की शक्ति न हो तो घेरे रहे और बल प्राप्त होने पर मार दे।

× × ×

जो बाँट कर न खावे, दुष्ट प्रकृति हो, कृतघ्न और निर्दयी हो ऐसे राजा को छोड़ देना चाहिये।

— महात्मा विदुर।

× × ×

जिस राजा के राज्य में न चोर, न पर स्त्री गामी, न दुष्ट वचन कहनेवाला, न साहसिक डाकू, और न दण्डघ्न अर्थात् राजा की आज्ञा का भंग करनेवाला है वह राजा श्रेष्ठ है।

भगवान मनु।

× × ×

जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या सन्देह ?

— महर्षि दयानन्द।



स्वदेश प्रेम



यदि स्वदेशाभिमान सीखना है तो उस मछली से सीखो जो स्वदेश के लिये तड़प तड़प कर जान दे देती है।

—जवाहरलाल नेहरू।

× × ×

जो भरा नहीं है भावों के बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

—स्वदेश, गोरखपुर।

× × ×

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर-पशु निरा है और मृतक समान है॥

—प्रताप, कानपुर।

× × ×

मातृभूमि की सेवा करना हर एक मनुष्य का कर्तव्य है।

—गणेशशंकर विद्यार्थी।

× × ×

यदि मुझ से कोई कहे कि किस देश के आकाश के नीचे मनुष्य के अन्तःकरण को पूर्णता प्राप्त हुई ? तो मैं कहूंगी कि वह देश भारतवर्ष है।

—एनी बिसेन्ट।

× × ×

यदि भारत के युवक जागृत होकर अपने कर्त्तव्य पालन में जुट पड़ें तो अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र बनाने में क्या देर है।

—साधु वास्वानी।

× × ×

देशभक्ति हृदय के कोमल भावों का नाश नहीं करती बल्कि उल्टा उन्हें जगाती है और विस्तृत करती है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

यदि भारत के संकट के समय हमारा जन्म हुआ है तो हमें परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिये कि उसने हमें देश की सेवा करने का अवसर दिया।

—स्वामी रामतीर्थ।

× × ×

भारत का भविष्य पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियों के हाथ में है।

—जवाहरलाल नेहरू ।

× × ×

भारतमाता आज पुकार कर कह रही है कि मेरे शहीद बच्चों को न भूल जाना !

—सरोजिनी नायडू ।

× × ×

जिस देश में न आदर हो न जीविका हो, न बन्धु न विद्या की प्राप्ति, वहाँ वास न करे।

× × ×

राष्ट्र के पाप को राजा, राजा के पाप को पुरोहित, स्त्रीकृत पाप को पति तथा शिष्य के पाप को गुरू भोगता है।

—चाणक्य ।

× × ×

जिस मनुष्य से अपने देश को कोई लाभ नहीं उससे मिट्टी का खिलौना अच्छा है जो बच्चों का दिल तो बहलाता है ?

—मौलाना रूम ।

× × ×

जब से बिदेशी माँसाहारी इस देश में आके गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुये हैं तबसे क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है।

—महर्षि दयानन्द ।



चर्खा और खद्दर

मैं चर्खा और खद्दर को सबसे ज्यादा महत्व देता हूं। तुम मेरे हाथ में सूत दो मैं तुम्हारे हाथ में स्वराज्य दे दूंगा।

× × ×

चर्खा मानव समाज के गौरव और समानता का चिन्ह है। वास्तव में यह कृषि का आधार और राष्ट्र का दूसरा फेफड़ा है। एक ही फेफड़े से काम लेने के कारण हम लोगों का सर्वनाश हुआ जा रहा है।

× × ×

कोई भी नियम वह चाहे जितने उपयुक्त तथा होशियारी के साथ रक्खे गये शब्दों से बना हो तब तक संतोषजनक प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सकता जब तक लोग एक बहुत बड़ी संख्या में स्वयं उसका पालन करने को तैयार नहीं हो जाते।

× × ×

खद्दर इसका उदाहरण है कि अब हम अपनी प्रगाढ़ निद्रा से चौंक पड़े हैं।

× × ×

खद्दर इस बात का द्योतक है कि अब हमने अपने दीन भाइयों की दीनता का अनुभव करना आरम्भ कर दिया है।

× × ×

खद्दर इसकी घोषणा है कि अब हम अपनी आवश्यकताओं के लिये पर मुखापेक्षी नहीं रहना चाहते।

× × ×

खद्दर हमें यह उपदेश दे रहा है कि हम अपने बिखरे घर को किस भांति सँभाल सकते हैं।

× × ×

खद्दर हमें अपने स्वार्थ की याद दिला रहा है और हमें नष्ट भ्रष्ट प्राचीन वैभव का स्वप्न दिखा रहा है।

× × ×

खद्दर मोटे से मोटे और पतले से पतले वस्त्र का नाम है। खद्दर भद्दे से भद्दा और उमदे से उमदा हो सकता है।

× × ×

खद्दर उन सब सूती, रेशमी, ऊनी व ज़री के कपड़ों का नाम है जो देश में देश वासियों द्वारा बिना विदेशों से आये हुये यन्त्रों की सहायता से तैयार होता है।

× × ×

खद्दर नंगों का वस्त्र, भूखों को अन्न, दरिद्रों को आश्वासन, बेकारों को काम, पूँजी पतियों को ऐश्वर्य-वृद्धि और दुखियों को सुख की आशा दिलाता है।

× × ×

वस्त्र के सम्बन्ध में स्वतन्त्र होने का अर्थ यह है कि हम प्रतिवर्ष ७० करोड़ रुपयों को विदेश जाने से रोक सकते हैं।

—महात्मा गांधी।

× × ×

मुझे कितने ही बुद्धिमान लोग चरखे के पीछे पागल कहते हैं।

डा० प्रफुल्लचंद राय।

× × ×

जो आदमी एक बार खद्दर खरीदता है वह कम से कम तीन आने गरीबों के यहाँ देता है।

× × ×

खादी में कितना स्वाभिमान है यह वही आदमी जानता है जो आग्रह पूर्वक खादी पहिनता है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

विदेशी वस्तुओं के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर स्वदेशी वस्तुओं को न अपनाना बुद्धिमानी नहीं है।

× × ×

स्वदेशी वस्तुओं में आपको दो वस्तुओं का लाभ है प्रथम संगठन और द्वितीय स्वराज्य। —महात्मा मेजिनी।

असहयोग और सत्याग्रह

असहयोग एक ऐसी तलवार है कि जिसके चारों तरफ धार है। यह जिसपर चलाई जाती है उसका भी फायदा करती है और साथ २ चलाने वाले का भी।

—महात्मा गांधी।

× × ×

अत्याचारी महापुरुषों की पाशविक शक्ति के नाश करने वाली विचित्र चिड़िया का नाम असहयोग है।

—दर्शनानंद परिव्राजक।

× × ×

मुझे निश्चय है कि शान्तिमय असहयोग एक पवित्र कर्त्तव्य है।

× × ×

असाध्य रोग का इलाज भी दारुण ही करना पड़ता है। अराजकता तथा उससे भी बुरी बुराइयों के लिये शान्तिमय असहयोग के सिवा दूसरा कोई उपाय ही न था।

—महात्मा गांधी

+ + +

यद्यपि यह कहना कठिन है कि अगले १० वर्षों में कांग्रेस का भविष्य क्या होगा। पर इतना मैं जरूर कह सकता हूँ कि कौंसिलों में जाकर कांग्रेस वालों को निराश होना पड़ेगा। इस कार्यक्रम का आधार हिंसा होगी वा अहिंसा, यह मैं नहीं कह सकता।

—डा० किचलू।

× × ×

२७ वर्ष तक इस सिद्धान्त का अध्ययन करने तथा उसे काम में लाने के पश्चात् भी मुझे उसके सम्बन्ध में कुछ जानने का दावा नहीं हो सकता। मनुष्य के जीवन में सत्याग्रह करने के बहुत ज्यादा मौके नहीं आया करते। इसलिये इसके सम्बन्ध में अन्वेषण करने का क्षेत्र बहुत सीमित है।

× × ×

सत्याग्रह करना, जानबूझकर माता पिता गुरु और धार्मिक या सांसारिक बड़े लोगों की आज्ञाओं का पालन करना सीखने के बाद ही आ सकता है।

× × ×

जीवन का सबसे अच्छा आदर्श है सत्याग्रह !

× × ×

असह्य दुखों का इलाज केवल सत्याग्रह है।

—महात्मा गांधी।

× × ×

कोई स्वेच्छाचारी सरकार ऐसे संगठित उद्योगों को कभी पसंद नहीं कर सकती जो उसकी परवाह न करते हुये स्वतन्त्र भाव से चलाये जा रहे हैं अथवा जो उसकी अपनी योजनाओं से मेल न रखते हों।

—जवाहरलाल नेहरू।

× × ×

यदि सभ्य जगत के सत्ताधारी विवेक और विचार से काम लें तो यह संसार वास्तव में स्वर्ग हो सकता है।

—गोविन्द वल्लभ पंत।



स्वाधीनता



स्वराज्य तुम्हारे भीतर से पैदा होगा। भाइयो तुम लड़ाई मत करना। हत्या करने से पाप लगता है। फिर तुम बहुत से होने पर भी अस्त्रहीन और कमजोर हो। तुम केवल काम करो और अपने भाइयों को समझाते रहो।

—महात्मा गांधी।

× × ×

मैं राजनैतिक परतन्त्रता से बौद्धिक परतन्त्रता को ज्यादा ख़राब समझती हूँ।

—सरोजिनी नाइडू।

× × ×

स्वतन्त्रता से हमारा अभिप्राय ब्रिटिश प्राधान्य और साम्राज्यवाद से पूर्ण स्वतन्त्रता का है। स्वतन्त्र होने पर मुझे

विश्वास है कि भारत संसार के सहयोग और संगठन का प्रयत्न करेगा।

× × ×

ब्रिटिश साम्राज्य का आलिंगन खतरनाक है क्योंकि वह प्रेम का नहीं।

× × ×

हम पूर्ण स्वाधीनता चाहते हैं। यह (लाहोर १६२६ की) कांग्रेस यह स्वीकार न करेगी कि ब्रिटिश पार्लियामेन्ट को हमें आज्ञा देने का कोई हक है। हम उससे कोई अपील नहीं करते।

× × ×

हमें अपनी कमजोरी मालूम है, और हमें अपने बल का अभिमान नहीं। परन्तु हमारे दृढ़ निश्चय के सम्बन्ध में कोई—कम से कम इंगलैण्ड तो—भूल न करे!

—जवाहरलाल नेहरू।

× × ×

मैं भारत के लिये वही पूर्ण स्वतन्त्रता (Complete independence) चाहता हूँ जो इस अंग्रेजी वाक्य का पूरा मतलब होता है। मेरे लिये तो पूर्ण स्वराज्य ही पूर्ण स्वतन्त्रता, की अपेक्षा अधिक असीमित अर्थ रखता है।

लेकिन पूर्ण स्वराज्य से भी वह अर्थ नहीं निकलता जिसे चाहता हूँ।

—जवाहरलाल नेहरू।

× × ×

हिन्दू लोग भारत में स्वराज्य चाहते हैं हिन्दू राज्य नहीं।

× × ×

हिन्दुओं के लिये हिन्दू राज्य की इच्छा करना ही मैं देश-द्रोह मानता हूँ।

—महात्मा गांधी।

× × ×

संसार सदा एक भाव नहीं रहता। यदि आज कोई जाति स्वतन्त्र है तो कल वह अवश्य ही परतन्त्र होगी। कल कोई जाति परतंत्र थी तो वही आज स्वतन्त्र है।

+ + +

जो पुरुष शुद्ध चित्त से स्वजातीय संशोधन में तत्पर रहते हैं वे अंत में सब दुख कठिनाइयों को सहकर अवश्य कृत-कार्य होते हैं।

—लाला लाजपतराय।

× × ×

जो जाति अपने परमात्मा और अपने सहयोगियों पर विश्वास रखती है वह निसन्देह उन्नति को प्राप्त होने के योग्य है। सांसारिक छोटे २ काम यद्यपि उसकी उन्नति के

मार्ग में प्रतिबंधक होंगे पर वास्तव में उसकी स्वतन्त्रता वा उन्नति को कदापि नहीं रोक सकते।

—लाला लाजपतराय।

× × ×

दरिद्रता माननीय सुख की कट्टर शत्रु है। यह स्वतन्त्रता का घात कर देती है। कुछ सद्गुणों को असम्भव और कुछ को कठिन बना देती है।

—जानसन।

× × ×

स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे लेकर ही रहेंगे।

—भगवान तिलक।

× × ×

किसी भी राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिये राष्ट्र में वीर माताओं की आवश्यकता होती है।

× × ×

जो कर्त्तव्य परायण हैं जिनमें कर्तव्य शक्ति है वे किसी दूसरे का मुंह नहीं ताकते वे अवसर नहीं ढूंढ़ते, सिर्फ अवस्था देखते हैं जैसी स्थिति रहती है उसी की गुरुता के अनुसार वे व्यवस्था करते हैं।

—नेपोलियन।

× × ×

मैं स्वाधीनता को धर्म समझता हूं राजनीत नहीं।

—ऐराडरूज।

× × ×

विदेशी राज्य कितना ही दयालु और हितैषी क्यों न हो। वह हमें विना दबाये न छोड़ेगा। उसका उद्देश्य कितना ही अच्छा क्यों न हो किन्तु उससे हमारा हित कदापि नहीं हो सकता।

× × ×

—अरविन्द घोष।

स्वदेशी राज्य कितना ही बुरा क्यों न हो वह अच्छा है। परन्तु विदेशी राज्य कितना ही अच्छा से अच्छा हो, बुरा है।

—महर्षि दयानन्द।

× × ×

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये पहिले प्रतिबंधक कानूनों को तोड़ना पड़ता है फिर स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् नये कानूनों की रचना करनी पड़ती है।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर।

× × ×

जो प्रजा एक बार स्वतन्त्रता प्राप्त करने का निश्चय कर लेती है वह उसे जरूर प्राप्त होती है।

—गैरीवाल्डी।

× × ×

जब पाप बढ़ जाता है तब पापी को न भय होता है और न आशंका। उसका बल और उसकी वीरता ईश्वर की क्रोधाग्नि में पड़कर दग्ध हो जाती है। यदि विदेशी मुगल सम्राट् अन्यायी और अत्याचारी न होते तो वे कदापि राज्य भ्रष्ट न होते।

—लक्ष्मीबाई।

× ×

यदि संकटमय स्थिति ने तुम्हें किसी उच्चतर विषयका ज्ञान नहीं कराया अथवा यों कहिये कि यदि तुमने अपनी पीड़ितावस्था में कोई नवीन उच्च अनुभव नहीं प्राप्त किया तो इसका अर्थ यही है कि उस कष्ट के ऊपर तुम्हारा अधिकार नहीं रहा! प्रत्युत कष्ट ने ही तुम्हारे ऊपर अपना अधिकार कर लिया।

× × ×

विपत्तियाँ मेरा सत्यानाश नहीं कर सकती मैं स्वयं अधिक बलवान् और चरित्रवान होकर इनको मटियामेट करूंगा।

—वर्नार मेकफेडन।

× × ×

काँग्रेस ने अपने विगत कार्यकाल में एक बड़ा हिस्सा लिया है जितनी शक्ति काँग्रेस की बढ़ी उतनी ही देश की बढ़ी। काँग्रेस के द्वारा अब हम आजादी के दरवाजे पर पहुँचे हैं और आशा है कि जल्दी पूर्ण स्वराज्य हासिल करेंगे।

—जवाहरलाल नेहरू।

+ + +

स्वराज्य का अर्थ है उत्तमस्व का राज्य। अधमस्व का राज्य नहीं।

—डा० भगवानदास।

× × ×

हमारी सारी लड़ाई स्वाधीनता के लिये है। हमको न दुःख का ख्याल है न सुख का। ख्याल है स्वाधीनता का।

—स्वामी विवेकानन्द।

× × ×

कॉंग्रेस के इतिहास के गत ५० वर्ष हमें स्पष्ट बताते हैं कि हम कहाँ थे और अब कहाँ है।

—जवाहरलाल नेहरू।

× × ×

जब हम अपने भूत और भविष्य का अवलोकन करते हैं तो हमारा हृदय आशा और गर्व से भर उठता है। भूत में राष्ट्र ने जो कुछ किया है वह हमारे गर्व का कारण है और आशा इस विश्वास के कारण होती है कि निकट भविष्य में हमारी विजय निश्चित है।

—सुभाषचन्द्र बोस।

× × ×

यदि हम स्वतन्त्र होना तो चाहते हैं तो स्वतन्त्र पुरुष का आचरण व्यवहार कैसा होता है यह भी हमें जानना चाहिये।

× × ×

हमें अब लगातार नागरिक अधिकारों और कर्त्तव्यों की सीधी २ शिक्षा मिलनी चाहिये और अगर यह अच्छी तरह दी गई तो अवश्य ही हम निकट भविष्य में अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

× × ×

काँग्रेस को ही हमें नागरिक अधिकारों और कर्त्तव्यों का सरल पाठ पढ़ा सकती है क्योंकि काँग्रेस ही ऐसी एक संस्था है जिसका प्रभुत्व जन साधारण के हृदय पर है जिसकी बात व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से लोग मानेंगे।

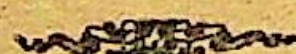
—श्रीप्रकाश।

× × ×

राज्य का न रहना अच्छा, परन्तु दुष्ट राजा का राज्य होना अच्छा नहीं। —चाणक्य।



साम्यवाद



मैंने साम्यवादी पार्टी की स्थापना का स्वागत किया है। उसके बहुत से सदस्य माननीय तथा आत्मत्यागी कार्यकर्ता हैं इतना होते हुये भी उनके जिम्मेदार पर्चों (पैन्फलेटों) में प्रकाशित उनके कार्यक्रम पर मेरा उनसे मौलिक मतभेद है। परन्तु नैतिक लाभ के कारण उनके साहित्य द्वारा जिन विचारों का प्रचार हो रहा है, मैं उन्हें नहीं दबाऊंगा।

× × ×

साम्यवादियों के विचार मुझे चाहे जितने भिन्न मालूम हों किन्तु स्वतन्त्रता के साथ उनके प्रचार करने में हस्तक्षेप मैं नहीं करना चाहता।

—महात्मा गांधी।

× × ×

जो रुपया लगाता है वही मुनाफे का मालिक होता है। ऐसी मालिकों की धारणा है। अफसोस की बात है कि प्रायः सारा समाज ऐसा ही मानता है। इससे भी ज्यादा अफसोस की बात यह है कि बहुत से कर्मचारी और मजदूर भी इस तर्क को मंजूर कर लेते हैं। मेरा कहना यह है कि यह बात गलत है।

× × ×

यदि कोई आदमी अपना पेट काट कर कुछ बचा लेता है तो वह तो शायद यह कह सके कि यह बचत का रुपया मेरा है। पर जो लखपती हैं जिसके पास बिना पेट काटे रुपया बचता है वह तो ऐसा नहीं कह सकता।

× × ×

मेरा दृढ़ विश्वास है कि बिना समाजवाद की शरण गये समाज का कमसे कम उन लोगों का (जो दूसरों के फायदे के लिये अपना पसीना बहाते हैं और सदा अधिकार हीन नौकर बने रहते हैं) का कल्याण नहीं हो सकता।

× × ×

एक मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण, एक मनुष्य द्वारा दूसरों की योग्यता और श्रम का अपने स्वार्थ के लिये उपयोग बंद हो जाना चाहिये। यह समाज वादी व्यवस्था में ही हो सकता है।

—सम्पूर्णानन्द।

× × ×

भारत का भविष्य किसानों के हाथ में है।

—जवाहरलाल नेहरू।

× × ×

संसार के सब प्राणी स्वतन्त्र और स्वाभाविक जीवन व्यतीत करने आये हैं उनको स्वार्थ के लिये कष्ट पहुँचाना महान पाप है।

—स्वामी सत्यदेव।

× × ×

चरम सीमा तक पहुँचा हुआ अत्याचार क्राँति को अवश्य जन्म देता है।

—गणेशशंकर विद्यार्थी

× × ×

जो पराये का धन नहीं लेता उसकी आवश्कता स्वयं पूर्ण होती रहती है।

—योगदर्शन।

× × ×

देश की बढ़ती हुई बेकारी को दूर करने के लिये एक ही मार्ग है, गृह शिल्प की उन्नति है।

—मैजिनी।

× × ×

ऐ अमीरो! अगर तुममें न्याय और दया होती तो हममें

संतोष और शाँति होती। और संसार से भीख की प्रथा ही उठ जाती।

—महात्मा शेखसादी।

× × ×

मान पूर्वक संधि करने के लिये हमारे शत्रु का आदर्श उतना ही ऊँचा होना चाहिये जितना हमारा।

—महात्मा गांधी।

× × ×

किसान दुनियाँ में सबसे अधिक निर्धन और विपद ग्रस्त हैं।

—सर रमेशचन्द दत्त।

× × ×

मजदूरों और किसानों को एकता के सूत्र में बँधो ? जब तक तुम एकता की जंजीर में बंधे रहोगे तुम्हें कोई दल हानि नहीं पहुँचा सकता। तुम्हें संसार को फिर से एक बनाना है।

—कार्ल मार्क्स।

+ + +

सफलता सरल नहीं है। जब तुम घाटी में खड़े हो तो एकाएक कूद कर पर्वत के शिखर पर आसीन नहीं हो सकते।

—एलबर्ट हबर्ड।

× × ×

अगर तुम्हें कोई अपने यहां नौकर रखना चाहता है तो

उसके सन्मुख तुम अपनी हीनता न प्रगट करो। नम्रता के वशीभूत होकर उसके हृदय में यह भावना न पैदा करो । कि तुम किसी योग्य नहीं हो।

× × ×

"मैं किस योग्य हूं मुझे क्या आता है" उचित नहीं। ऐसा न सोचो तुम तो शायद नम्र भाव से कह रहे हो परन्तु उसके चित्त पर इसका उलटा प्रभाव पड़ता है।

× × ×

यदि तुम ऐसा कहोगे तो तुम्हारा स्वामी यह समझ कर कि सत्य कह रहे हो तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लेगा और शायद तुमको पसंद न करे।

× × ×

संसार की हाट में सत्यता का व्यवहार करो। तुम्हें हानि न होगी।

—मेकफेडन।

× × ×

संगच्छध्वम्, सम्वदध्वम्, संवो मनांसि जानताम्"।

—वेद।

× × ×

यदि रिपब्लिकन एकता से यह अभिप्राय है कि मनुष्य मात्र भाई हैं और सबको परस्पर प्रेम करना चाहिये। उन कारणों को दूर कर देना चाहिये जो परस्पर द्वेष विरोध फैलाते हैं तो हम लोग इस सिद्धान्त के पृष्ट पोषक तथा सहायक हैं।

—ग्वीसेप मैज़िनी।

नीति



जीविका, भय, लज्जा, कुशलता, त्याग भाव यह पाँच जहाँ न हो वहाँ के लोगों के साथ संगति न करनी चाहिये।

—चाणक्य

× × ×

काम में लगाने पर सेवकों की, दुख आने पर बान्धवों की,। विपति काल में मित्र की, और धन के नाश होने पर स्त्री की परीक्षा होती है।

× × ×

विष से अमृत, अपवित्र स्थान से सोना, नीच के पास से विद्या और दुष्ट कुल से स्त्री रत्न लेना योग्य है।

× × ×

जिसका पुत्र वश में है, स्त्री इच्छानुसार चलती है, प्राप्त धन पर जो सन्तोष रखता है उसको यही स्वर्ग हैं।

× × ×

कुमित्र पर कदापि विश्वास न करे और मित्र पर भी विश्वास न रक्खे। ऐसा न हो मित्र रुष्ट होकर गुप्त बातों को खोल दे।

× × ×

मूर्खता दुख है और जवानी भी दुख है। दूसरे के घरपर रहना तो बहुत ही दुख होता है।

× × ×

नदी तट के वृक्ष, दूसरे के घर जाने वाली स्त्री, मंत्री रहित राजा निःसन्देह शीघ्र नष्ट होते हैं।

× × ×

दुराचारी, दुष्ट दृष्टिवाला, बुरे स्थान में बसनेवाला और दुर्जन, इन मनुष्यों की मित्रता जिसके साथ हो वह शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

× × ×

किसके कुल में दोष नहीं है? रोग ने किसे पीडित नहीं किया? किसको दुख नहीं मिला? सदा सुख किसको है?

× × ×

कन्या को श्रेष्ट कुल में देना चाहिये, पुत्र को विद्या में शत्रु को व्यसन में, और मित्र को धर्म में लगाना चाहिये।

× × ×

पुरुषार्थ में दरिद्रता नहीं, ईश्वर नाम जपने से पाप नहीं,

चुप रहने से लड़ाई नहीं, और जागने वाले को भय नहीं होता।

× × ×

पुत्र को पाँच वर्ष की आयु तक प्यार करे, फिर दस वर्ष तक ताड़ना करे, और सोलहवें वर्ष के प्राप्त होनेपर उसके साथ मित्र के समान आचरण करे।

× × ×

उपद्रव उठनेपर, शत्रु के आक्रमण करने पर, भयानक अकाल पड़ने पर और दुष्ट जन के संग होने पर जो भागता है वह जीवित रहता है।

× × ×

जैसे मछली कछुई, और पक्षी, दर्शन ध्यान और स्पर्श से अपने बच्चों को पालती हैं वैसे ही सज्जनों की संगति मनुष्यों को पालती है।

× × ×

विना अभ्यास के शास्त्र विष है अजीर्ण में भोजन विष है। दरिद्र को सभा विष है और वृद्ध पुरुष को युवक स्त्री विष है।

× × ×

मूर्खों को पण्डितों से, दरिद्रियों को धनियों से, विधवाओं को सौभाग्यवती से, और व्यभिचारिणी स्त्रियों को पतिव्रता से द्वेष होता है।

× × ×

जैसी होनहार होती है वैसी ही बुद्धि हो जाती है वैसे ही उपाय और सहायक मिलते हैं।

× × ×

ऋण करने वाला पिता, व्यभिचारिणी माता, सुन्दरी स्त्री, और मूर्ख पुत्र, शत्रु है।

× × ×

लोभी को धन से अहंकारी को विनय से, मूर्ख को उसकी इच्छानुसार बर्तने से, और पंडित को सचाई से वश में करना चाहिये।

× × ×

मित्र का न होना अच्छा, पर कुमित्र का मित्र होना अच्छा नहीं।

—चाणक्य।

× × ×

गाड़ी को पाँच हाथ दूर से, घोड़े को १० हाथ से, हाथी को हजार हाथ और दुर्जन को देश त्याग कर दूर रहना चाहिये।

× × ×

दीपक अंधकार को खाता है और काजल उत्पन्न करता है। मनुष्य जैसा अन्न खाता है वैसा ही सन्तान होती है।

× × ×

तेल लगाने पर, चिता का धुआँ लगने पर, स्त्री प्रसंग

करने पर, बाल बनाने पर जब तक स्नान करे तबतक मनुष्य चाण्डाल है।

+ + +

बुढ़ापे में मरी स्त्री, बन्धु के हाथ में गया धन, दूसरों के आधीन भोजन, यह तीनों मनुष्य को विडम्बना अर्थात् अपमान कारक होते हैं।

× × ×

सोने में सुगन्ध, गन्ने में फल, चन्दन वृक्ष में फूल, विद्वान् कोधनी, राजा को चिरंजीवी नहीं किया इससे निश्चय है कि परमात्मा को पहिले बुद्धि देने वाला कोई नहीं था।

× × ×

दृष्टि से शोधकर पाँव रक्खे, कपड़े से छान कर जल पीवे शास्त्र से शुद्ध हुई वाणी बोले और मन से विचारकर कार्य करे।

× × ×

सोने का मृगा न पहिले किसी ने रचा, न देखा और न सुना। फिर भी रामचन्द्र जी उसपर रीझ गये। विनाश के समय बुद्धि विपरीत हो जाती है। —चाणक्य।

× × ×

क्रोध हर्ष, घमण्ड, लज्जा धैर्य और अहमन्यता जिसको अर्थ (उद्देश) से नहीं हटाते वह ही पण्डित कहा जाता है।

—महात्मा विदुर।

× × ×

जिसके काम को सर्दी, गर्मी, भय काम, धन शीलता अथवा धन हीनता से कोई बाधा नहीं होती वह ही पंडित कहाता है।

× × ×

जिसकी व्यवहारिक बुद्धि, धर्म और अर्थ के अनुकूल रहती है जो काम को त्याग कर अर्थ का ग्रहण करता है वह ही पंडित कहाता है।

× × ×

उत्तम प्रकृति के मनुष्य शक्ति के अनुसार कार्य करते हैं वे किसी का अपमान नहीं करते।

× × ×

जो शीघ्र समझ लेता है अधिक समय तक स्वाध्याय करता है विना पूछे दूसरे के कार्य में सम्मति नहीं देता यही पण्डित का प्रथम लक्षण है

× × ×

उत्तम प्रकृति के पुरुष अप्राप्य की इच्छा नहीं करते नष्ट हुये का पश्चात्ताप नहीं करते और न विपत्ति में घबड़ातेही हैं।

× × ×

जो निश्चय करके कार्य आरम्भ करता है, आरम्भ करके बीच में नहीं ठहरता, जिसका मन वश में है वह पंडित है।

× × ×

जो अपनी प्रतिष्ठा में प्रसन्न नहीं होता, न अपमान से दुखी होता है, गंगा के गहरे झील के मानिंद जो अविचल रहता है वह पण्डित है।

× × ×

जो अनवरत वक्ता, विचित्रभाषी, तर्कशील, शीघ्र प्रत्युत्तर देने वाला और ग्रंथ को अव्याहत गति से बांचनेवाला है वह पंडित है।

× × ×

जो शास्त्रविहीन, बड़ा घमण्डी, दरिद्र, बड़े मनोरथ वाला और बिना कर्म पदार्थों की प्राप्ति का अभिलाषी हो उसको मूर्ख कहते हैं।

× × ×

जो न चाहने वाले को चाहता है चाहने वाले को छोड़ता और जो बलवान से द्वेष करता है उसको मूढ़ बुद्धि कहते हैं।

× × ×

जो शत्रु को मित्र बनाता है मित्र से द्वेष करता तथा दुख पहुँचाता है वह मूढ़ बुद्ध है।

× × ×

जो श्रद्धायुत अन्न जलादि से पितरों को आदर दान और हवन आदि से देवताओं का पूजन नहीं करता वह मूर्ख है।

× × ×

जो बिना बुलाये कहीं घुसता, बिना पूछे बहुत बोलता और अविश्वस्त में विश्वास करता है वह मूर्खों में भी अधम है।

× × ×

जो दूसरे पर दोषारोपण करे और अपने अन्दर वही दोष विद्यमान रक्खे जो असमर्थ होकर क्रोध करता है वह महा-मूर्ख है।

× × ×

जो अशिष्य को शिक्षा देता है जो शून्य की उपासना करता है और जो निंदित की सेवा करता है वह मूढ़ है।

× × ×

बहुत धन अथवा विद्या और ऐश्वर्य प्राप्त करके जो निर-भिमान होकर विचरता है वह पंडित है।

× × ×

धनुष से छूटा हुआ वाण किसी को मारे या न मारे पर बुद्धिमान द्वारा प्रयुक्त की हुई बुद्धि राजा सहित राष्ट्र को नष्ट कर देती है।

× × ×

विषरस एक को मारता है और एक ही शस्त्र से भी एक व्यक्ति मारा जाता है परन्तु मंत्र (गुप्त सम्मति) का विगाड़ राजा को राष्ट्र सहित नष्ट कर देता है।

× × ×

शांतिशील तलवार जिसके हाथ में है उसका दुष्ट पुरुष क्या करेगा ?

× × ×

पराक्रम हीन राजा तथा घर घुसने ब्राह्मण. इन दोनों को भूमि इस भाँति खा जाती है जैसे सर्प बिल-वासियों को ।

× × ×

जो कटुवचन नहीं बोलता और नीच की पूजा नहीं करता वही मनुष्य लोक में कीर्तिमान होता है ।

× × ×

निरुद्योगी गृहस्थ, और उद्योगी भिखमंगा कभी शोभा नहीं पाते ।

× × ×

भक्त, भृत्य और "मैं आपका हूँ" ऐसा कहने वाले इन तीन शरणागतों को आपत्ति काल में भी न छोड़े ।

× × ×

चोर बेहोशों में और वैद्य रोगियों में सुखी होता है ।

× × ×

ईर्ष्या करनेवाला, दयालु, असंतोषी, क्रोधी सदैव शंकाशील और दूसरे के सहारे जीने वाले नित्य दुखी हैं ।

+ + +

जो वृक्ष से कच्चे फल को तोड़ता है वह उससे वास्तविक रस को तो पाता ही नहीं, वरन् बीज नष्ट करने का भी दोषी होता है।

× × ×

गंध से गाय देखती है, वेदवक्ता वेदों से, राजा गुप्त दूतों से और अन्य लोग नेत्रों से देखते हैं।

+ + +

जो अपनी उन्नति चाहे वह श्रेष्ठों की सेवा करे, किन्तु समय पड़े पर मध्यमों की। नीचों की सेवा तो कभी करे ही नहीं।

× × ×

आसन, स्थान, जल, प्रिय वचन, यह भले मनुष्यों के घर कभी कम नहीं होते।

× × ×

जो कोई बिना किसी सम्बन्ध के मित्र भाव से वर्ते, वही बन्धु, मित्र, सहारा और आश्रयदाता है।

× × ×

जो बिना कारण क्रोध करते हैं बिना कारण ही प्रसन्न होते हैं वे दुष्ट स्वभाव के मनुष्य हैं।

× × ×

जो क्षण ही में खुश, क्षण ही में नाखुश होते रहते हैं ऐसे लोगों की खुशी भी भयंकर ही होती है।

× × ×

सामुद्रिक व्योपारी, पहिले का चोर, पासा खेलने वाला धूर्त्त, वैद्य, शत्रु, मित्र और भाट इन सात को साक्षी न बनावे।

× × ×

बुढ़ापा रूप को, आशा धैर्य को, मृत्यु प्राणों को, निंदा धर्म को, क्रोध लक्ष्मी को, नीच की सेवा शील को, काम लज्जा को, और अभिमान सबको हर लेता है।

× × ×

बुद्धि, कुलीनता, इन्द्रिय-निग्रह, वेद पाठ, पराक्रम, मिष्टभाषण, सामर्थ के अनुसार दान और कृतज्ञता मनुष्य की कीर्ति के प्रकाशक हैं।

× × ×

जो मनन शील धार्मिक और विद्वान हैं वही मनुष्य कहलाने योग्य हैं।

× × ×

वह सभा नहीं जहाँ वृद्ध नहीं, वह विद्वान नहीं जो धर्म की बात न कहे, वह धर्म नहीं जिसमें सत्य न हो, वह सत्य नहीं जो कपट सहित हो।

× × ×

गाली देनेवाले को गाली न देवे, क्योंकि सहने वाले का क्रोध ही गाली देने वाले को जलाता है और इसका पुण्य वह पाता है।

× × ×

मनुष्य जैसों के पास रहता है जैसों की सेवा करता है जैसा होना चाहता है वैसा ही हो जाता है।

× × ×

देवता डण्डा लेकर ग्वाले के समान रक्षा नहीं करते किन्तु जिसकी रक्षा करना चाहते हैं उसे शुद्ध बुद्धिप्रदान कर देते हैं।

× × ×

कर्णी, नालिक, नाराच, (तीन प्रकार के) बाण शरीर से निकाले जा सकते हैं परन्तु वाणी का बाण नहीं निकलता, वह हृदय में चुभता है।

× × ×

बाण और कुल्हाड़ी का कटा हुआ घाव भर सकता है परन्तु वाणी का घाव नहीं भरता।

× × ×

जैसे सूखी लकड़ी के साथ गीली लकड़ी जल जाती है वैसे ही पापी के साथ महात्मा भी दुख पाते हैं।

× × ×

जो धन का स्वामी है वह इन्द्रियों का स्वामी नहीं हो सकता। इन्द्रियों के स्वामी होने से वह ऐश्वर्य से गिर जाता है।

× × ×

नीचों को अपनी जीविका छूटने का डर, मध्यम श्रेणी के लोगों को मरने का डर, पर उत्तम पुरुष अपमान से डरा करते हैं।

× × ×

साधु जन ही भलेमानसों तथा दुष्टों को सहारा देते हैं किन्तु दुष्ट सदैव भलेमानसों की हानि करते हैं।

× × ×

विद्या का मद, धन का मद, कुटुम्ब का मद, यह नीचों के लिए मद हैं। किन्तु श्रेष्ट लोगों को इसी में शांति मिलती है

× × ×

काक कमल बन में प्रीति नहीं रखता, न हंस कूप जल में। मूर्ख पडितों की संगति नहीं चाहता, न दास सिंहासन को।

× × ×

जिसको विवेक नहीं, केवल शास्त्र ही सुन लिया है वह शास्त्र के ठीक अभिप्राय को नहीं समझ सकता जैसे कलछुली रसोई के रस को। —महात्मा विदुर।

× × ×

गुरु, पंडित जन, कवि, मित्र, बेटा, बनिता, दरबान, यज्ञ कराने वाले, राज मंत्री, विप्र, पड़ोसी, वैद्य, और रसोइया से कभी शत्रुता नहीं करनी चाहिये।

× × ×

संसार में लोग अपने मतलब के लिये प्रीति करते हैं बिना मतलब के प्रीति करने वाले विरले ही होते हैं।

× × ×

जैसे जल चंचल है तनक देर में चला जाता है वैसे ही दौलत थोड़े ही समय में चली जाती है। —कविराय गिरधर।

+ + +

जो सेवक आज्ञा दिये कार्य को पूर्ण न करे अभिमानी और विरुद्ध बोलनेवाला हो उसे तत्काल निकाल देना चाहिये।

—म० विदुर।

× × ×

बुद्धिमान पुरुष शत्रु का विश्वास करके उसके घर न जावे।

× × ×

न शेर के बिना वन है, न बन के बिना शेर रह सकते हैं किन्तु बन शेरों की और शेर बन की रक्षा करते हैं।

× × ×

बुद्धि के वाण से मारे हुये प्राणी की, न वैद्य, न औषधि न हवन के मंत्र, न मंगलाचरण, न अथर्ववेद के पूर्ण सिद्ध प्रयोग ही रक्षा कर सकते हैं।

× × ×

बुद्धिमान से बिगाड़ करके यह न समझ बैठे कि मैं दूर हूँ। बुद्धिमान की बाहें लम्बी होती हैं।

× × ×

जल से अग्नि, और पत्थर से लोहा निकलता है। अतः नौकरों द्वारा व्योपार संचालन और पुत्रों द्वारा द्विजों की सेवा करे।

× × ×

जो मित्र नहीं, वह गहन विचार को जानने योग्य नहीं है।

× × ×

मूर्ख हो। पंडित होकर भी जिसने मन को वश में नहीं किया ऐसे व्यक्ति को कभी बिना परीक्षा किये मित्र न बनावे।

× × ×

जो अज्ञान से निंदित काम करता है वह कामों के समाप्त होने पर जीवन से भी मिट जाता है।

× × ×

दुराचारी, मूर्ख, निंदावादी, अधर्मी तथा बुरा बोलने वाले और क्रोधी को तत्काल अनर्थ घेरते हैं।

× × ×

समय के विपरीत बात कहने वाला यदि वृहस्पति भी हो तो अपमानित होता है।

× × ×

जो लड़ाके स्वभाव वाले, कामी, निर्लज्ज, शठ, और पापी प्रसिद्ध हैं उनके साथ रहना निन्द्य है। —महात्मा विदुर



निराकार ग्रंथ माला की युगान्तरकारी पुस्तकें

(१)

दिल्ली की शाहजादी ।

मुग़ल खान्दान के छठवें बादशाह औरङ्गजेब के जामाता महाराज छत्रपति शिवाजी को समस्त हिन्दू संसार जानता है। लेकिन जामाता शब्द को सुनकर शायद आप चक्कर में पड़ गये होंगे। महाराज शिवाजी के पुत्र शम्भाजी, जिनकी माता का नाम रोशनआरा था, औरङ्गजेब की प्यारी पुत्री थी जो दक्षिण में शिवाजी को ब्याही गई थी। मुसलमान इतिहासकारों ने अपनी कोशिश से इस मामले को दबा ही रक्खा था कि प्रगट न होने पावे परन्तु सच्चाई फूट निकली और यह रहस्यमय जीता जागता इतिहास चिरकाल के लिये प्रगट हो गया। प्रत्येक इतिहास प्रेमी को पढ़ना चाहिये। बढ़िया कागज़ सुन्दर छपाई पृष्ट संख्या लगभग १०० मू० ॥)

(२)

माई का लाल

गुरु गोविन्दसिंह और वीरबंदा की मुलाकात, दीवारों में चुने गये बालक जोरावरसिंह और फतेहसिंह के खून का बदला, तुर्कों का मायाजाल और सेना का संगठन, सरहिन्द पर बन्दा की चढ़ाई, सिक्खों की फूट, आशा पर तुषार, भीषण घोर संग्राम, हिन्दू राज्य की जड़, पुत्र और ७४० वीरों के साथ वीर बन्दा का वध बर्णन, ओजस्वी और वीरतापूर्ण कविता में पढ़िये। मूल्य ।)

(३)

भारतीय कटार।

इस पुस्तक में कुँवरदेवी की कुरबानी और वीरत्व का असली परिचय, आधुनिक दुर्गा भवानी का प्रबल पराक्रम, जयादेवी की विजय, नीलदेवी की फुर्ती, रानी दुर्गावती का चातुर्य तथा वीरत्व, कर्मदेवी की कर्मण्यता का जीवित जागृत और ज्वलन्त सच्चा पाठ पढ़ाने वाला अद्भुत वृत्तान्त और कटार का गौरव दिखलाया गया है। मूल्य ।≠)

(४)

वीर ललनायें।

इस पुस्तक में तुलसीबाई का विकटयुद्ध वर्णन, वीरबाला कोडमदे की वीरता, वीराँगना कमला का साहस महारानी कलावती की कीर्ति, स्फूर्ति, और पराक्रम, प्रमीला की प्रचण्ड पति भक्ति, साहस, मीराबाई की मान मर्यादा और ईश भक्ति, वीर बाला मुक्ता का शौर्य्य वृत्तान्त बड़ी ही सरल सरस और ओजस्वी भाषा में लिखा गया है। मूल्य ।≠)

(५)

तलवार की धनी।

इस पुस्तक में अर्गल की रानी का पराक्रम, महारानी पद्मिनी का रण चातुर्य, महारानी लक्ष्मीबाई का सैन्य संचालन

और बिकट युद्ध, महारानी चंचल कुमारी की चंचलता और युद्ध शक्ति का अद्भुत और वीर पराक्रम के साथ उज्ज्वल गुण गान संग्रह है। पुस्तक प्रत्येक वीर ललना, लाल, लाड़िले लड़ाके, लठैत, लाल बुझक्कड़ के पढ़ने और संग्रह के योग्य है। लगभग ६० पृष्ट की पुस्तक का मूल्य ।≠)

(६)

राजस्थान की सिंहनी।

इस पुस्तक में राजपुताने की वीर क्षत्री स्त्रियों में से दुर्गा देवी, किरण देवी और उर्मिला देवी की कीर्ति-कथा बड़ी ही ओजस्वी भाषा में लिखी गई है पढ़कर चित फड़क उठता है। वीर रस से शराबोर इन वीराँगनाओं का वीर चरित्र अवश्य पढ़ें। मू० ।)

(७)

वीर क्षत्राणियाँ।

जिस हिन्द में हो गुजरी हैं इस ओज की कन्या।
उस हिन्द के वीरत्व का कहना है भला क्या?

ऐसा कौन अभागा भारतीय होगा जिसने भारतीय वीर वीराँगनाओं का वीर भाव युक्त वीर चरित्र न सुना हो। उन्हीं बीस दुर्गाओं का वीरत्व पूर्ण कटार कौशल इस पुस्तक में वर्णित है मूल्य लगभग २५० पृष्ठ की पुस्तक का केवल १।) मात्र। सजिल्द १।।)



सामाजिक कुरीतियों का रोमाँचकारी

मौलिक उपन्यास

बी० ए०

राइन्दि

यह उपन्यास पं० सुदर्शनलालजी त्रिवेदी 'चक्र' की लौह लेखनी का अद्भुत आविष्कार है। एक बार हाथ में लेकर बिना समाप्त किये छोड़ने का जी नहीं चाहता। जासूसी तिलस्मी और ऐय्यारी के चक्करदार उपन्यास पढ़ने वाले भी इसे पढ़ कर बिना सराहना किये नहीं रहते। बेचारी इन्दिरा का सुखी परिवार, उस पर दुर्दैव की मार, अनेकों असह्य घटनाओं का घटाटोप भीषण गर्जन तर्जन, उसके रक्षकों की मर्दानगी और जिन्दादिली देख कर दिल थर्रा जाता है। इस आपत्ति काल में भी जिस रमणी ने हिम्मत नहीं हारी और सब दुःख झेलते हुये अपना धर्म बचाया उसका जीता जागता अद्भुत वृत्तान्त इस पुस्तक में पढ़िये।

मूल्य सजिल्द १।)

मिलने का पता:—निराकार पुस्तकालय, बनारस।

हमारी प्रकाशित पुस्तकें

१—दिल्ली की शाहजादी	॥)
२—माई का लाल	।)
३—भारतीय कटार	।=)
४—बीर ललनायें	।=)
५—तलवार की धनी	।=)
६—राजस्थान की सिंहनी	।)
७—बीर क्षत्राणियाँ	१।)
८—इन्दिरा बी० ए० सजिल्द	१।)
९—क्या ? क्या ?? सीखें !!!	॥।)
१०—घरेलू उद्योग धन्धे	।)
११—ईश्वर और धर्म ही सर्वस्व है (छप रही है)	

निराकार पुस्तकालय,
बनारस सिटी।

हस्ताक्षर.................

